भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन

⇒ वास्कोडिगामा द्वारा भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग के खोज के कारण :-

- कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार
- जहाजरानी निर्माण एवं नौ परिवहन में प्रगति
- पुनर्जागरण की भूमिका
- भारत से व्यापार कर अधिक धन कमाने की लालसा
- यूरोप एवं एशिया के व्यापार पर वेनिस एवं जेनेवा के व्यापारियों का अधिकार
- एशिया का अधिकांश व्यापार अरबवासियों के हाथ एवं भूमध्य सागर तथा यूरोपीय व्यापार इटली वालों के हाथ।

⇒ वास्कोडिगामा :-

Raj Holkar

* यह पुर्तगाल निवासी था।
* यह केप ऑफ गुड होप (उत्तमाशा अंतरीप) होते हुए एक गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मुनीक की सहायता से कालीकट बन्दरगाह पर कप्पकडाबू नामक स्थान पर पहुंचा। [17 मई, 1498 ई० में]
* कालीकट के तत्कालीन शासक जमोरिन ने वास्कोडिगामा का स्वागत किया।

नोट :- पेड्रो अल्वारेज केब्राल भारत पहुंचने वाला दूसरा पुर्तगाली था। [1500 ई. में]
1502 ई० में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया था।

⇒ भारत में आने वाली यूरोपीय कंपनियों का क्रम :

पुर्तगाली → डच → ब्रिटिश → डेनिस → फ्रांसीसी → स्वीडिश

पुर्तगाली

* 1503 में कोचीन (कोल्लम) में पुर्तगालियों ने अपनी प्रथम फैक्ट्री खोली

⇒ फ्रांसिस्को डि अल्मेडा :-

* यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर बनकर आया।
* इसने 1509 में मिस्त्र, तुर्की व गुजरात की संयुक्त सेना को पराजित कर दीव पर अधिकार कर लिया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* **ब्लू वॉटर पॉलिसी :-** यह पॉलिसी हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगीज नियंत्रण स्थापित करने के लिए अल्मेडा ने शुरू की थी।

⇒ अल्फांसो डी अल्बुकर्क :-

* भारत में पुर्तगीज शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
* पुर्तगीज सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारंभ की।
* पुर्तगीजों को भारतीय स्त्रियों से विवाह के लिए प्रोत्साहित किया
* अपने क्षेत्र में सती प्रथा पर रोक लगायी।
* बीजापुर के आदिल शाह से गोवा को जीता
* द० पू० एशिया की महत्वपूर्ण मंडी मलक्का पर नियंत्रण स्थापित किया।
* फारस खाड़ी पर स्थित हरमुज पर अधिकार किया

अधिकार का क्रम :-

गोवा (1510) → मलक्का (1511) → हरमुज (1515)

* इसने गोवा को राजनीतिक व सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में उभारा।

⇒ नीनो डी कुन्हा :-

* गोवा को पुर्तगीज राज्य की औपचारिक राजधानी बनाया
* इसने सेन्थोमी (मद्रास), हुगली (बंगाल), दीव में पुर्तगीज बस्तियों की स्थापना की।

Raj Holkar

⇒ अन्य तथ्य :-

* बंगाल के शासक मसूदशाह द्वारा पुर्तगालियों को चटगाँव और सतगाँव में व्यापारिक कंपनियाँ खोलने की अनुमति दी गयी।
* अकबर की अनुमति से हुगली में कंपनी स्थापना
* शाहजहाँ ने पुर्तगालियों के अधिकार से हुगली को छीना

⇒ पुर्तगालियों के पतन के कारण :-

- भारतीय स्त्रियों से विवाह एवं धर्मांतरण।
- व्यापारिक प्रशासन में अकुशलता
- रिश्वतखोरी एवं शासकीय नियुक्तियों में भ्रष्टाचार
- डचों का प्रवेश एवं सैन्य चुनौती

⇒ **कार्टेज आर्मेडा काफिला :-** यह समुद्री व्यापार पर नियंत्रण व्यवस्था थी। इसके अंतर्गत कोई भी भारतीय या अरबी जहाज बिना परमिट लिए अरब सागर में नहीं जा सकता था। इन जहाजों में काली मिर्च व गोला बारूद ले जाना निषेध था।

Raj Holkar
KD Job Updates
Scanned by CamScanner

⇒ पुर्तगालियों की भारत को देन :-

- भारत का जापान से व्यापार शुरू करने का श्रेय पुर्तगीजों को दिया जाता है।
- भारत में प्रिंटिंग प्रेस लाना
- भारत में तम्बाकू की खेती का विकास
- भारत में गोथिक स्थापत्य कला का आगमन।
- विभिन्न प्रकार के फल पपीता, सन्तरा, लीची, अनन्नास, काजू, बादाम, शकरकन्द आदि विदेशों से भारत लाये।

डच

- पुर्तगीजों के बाद भारत आये। ये नीदरलैण्ड व हॉलैण्ड के निवासी थे।
- इनकी कंपनी का नाम यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कंपनी ऑफ नीदरलैण्ड था।
- डचों ने भारत में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना 1605 ई० में मुसलीपट्टनम में की।
- डचों का भारत में प्रथम दल कार्नेलियस हाउटमैन के नेतृत्व में भारत आया।
- बंगाल में डचों ने प्रथम फैक्ट्री की स्थापना पीपली में की।

⇒ डचों द्वारा स्थापित कारखाने :-

Raj Holkar

प्रथम : मुसलीपट्टनम दूसरा : पत्तोपोली (निजामपत्तनम)
तीसरा : पुलीकट अन्य : सूरत, बिमलीपट्टनम, कराइकल, चिनसुरा, कोचीन, कासिमबाजार, बालासोर, नागपट्टनम

⇒ मुख्यालय :

* पुलीकट को डचों ने व्यापारिक केन्द्र व मुख्यालय बनाया
* 1690 में पुलीकट के स्थान पर नागपट्टनम को मुख्यालय बनाया गया

⇒ स्थापित फोर्ट :-

- चिनसुरा में गुस्तावुस फोर्ट की स्थापना [1653 ई० में]
- कोच्चि में फोर्ट विलियम की स्थापना [1663 ई० में]

⇒ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :-

* डचों ने मसाला द्वीप (इण्डोनेशिया) पुर्तगीजों से जीता
* ~~डचों~~ डचों ने मलक्का तथा सिलोन (श्रीलंका) को जीता
* डचों ने जकार्ता को जीतकर नए नगर बैटेविया की स्थापना की।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* मुगल बादशाह औरंगजेब ने 3.5 % वार्षिक चुंगी पर बंगाल, बिहार और ओडीशा में व्यापार का अधिकार डचों को प्रदान किया।
* डचों की व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता / कार्टेल पर आधारित थी।

नोट: भारत में डचों के आने से सूती वस्त्र उद्योग का विकास हुआ एवं भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है।

⇒ डचों के पतन के कारण :-

* डच कंपनी पर सरकार का सीधा नियंत्रण
* कंपनी के अयोग्य प्रशासक एवं कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार
* डचों की भारत से अधिक रुचि इण्डोनेशिया एवं मसाला द्वीपों में थी।
* बेडरा (बंगाल) का युध्द (1759 ई०) में अंग्रेजों ने डचों को बुरी तरह पराजित किया जिससे डचों की भारत में शक्ति समाप्त हो गयी।

Raj Holkar

अंग्रेज / ब्रिटिश

* 1599 ई० में लंदन में व्यापारियों के एक समूह ने द गवर्नर एण्ड कंपनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज नामक कंपनी की स्थापना पूरब के देशों के साथ व्यापार करने हेतु की।
* 1599 ई० में जॉन मिल्डेन हाल नामक अंग्रेज स्थल मार्ग से भारत आया
* इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने दिसम्बर, 1600 ई० में 15 वर्षों के लिए पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने का एकाधिकार प्रदान किया। यह अधिकार समुद्र मार्ग से व्यापार के लिए था।

⇒ जेम्स प्रथम द्वारा भेजे गए दूत :-

कैप्टन हॉकिन्स :-

* 1608 ई० में हैक्टर नामक पहला अंग्रेजी जहाज कैप्टन हॉकिन्स के नेतृत्व में भारत आया जो सूरत बन्दरगाह पर पहुंचा।
* समुद्र के रास्ते भारत पहुंचने वाला पहला व्यक्ति कैप्टन हॉकिन्स था।
* कैप्टन हॉकिन्स बादशाह जहाँगीर से मिलने आगरा पहुँचा।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* जहाँगीर ने पहले हॉकिन्स को सूरत में व्यापार की अनुमति दी परन्तु स्थानीय सौदागर एवं पुर्तगीजों के विरोध के कारण अनुमति रद्द कर दी।

* 1612 ई॰ में स्वाल्ली के युद्ध में अंग्रेज कैप्टन बेस्ट ने पुर्तगीज सेना को परास्त किया। इसकी वीरता के कारण 1613 ई॰ में जहाँगीर ने अंग्रेजों को सूरत में स्थायी फैक्ट्री लगाने की अनुमति प्रदान की।

⇒ फैक्ट्री की स्थापना :-

* दक्षिण में ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना पहला कारखाना 1611 ई॰ में मुसलीपत्तनम में स्थापित की।
* 1613 ई॰ में सूरत में अंग्रेजों ने प्रथम स्थायी फैक्ट्री की स्थापना की। इसका अध्यक्ष टॉमस एल्डवर्थ बनाया गया।

1609 ई॰ में सम्राट जेम्स प्रथम ने कम्पनी के व्यापारिक अधिकार को अनिश्चितकाल के लिए बढ़ा दिया।

Raj Holkar

⇒ सर टॉमस रो :-

* सर टॉमस रो, जेम्स प्रथम के दूत के रूप में 18 सितम्बर, 1615 में सूरत पहुंचा।
* 10 जनवरी, 1616 ई॰ में टॉमस रो जहाँगीर से मिलने अजमेर पहुंचा

---

* ~~1623~~ 1632 ई॰ में अंग्रेजों ने गोलकुण्डा के बन्दरगाहों से व्यापार पर एकाधिकार प्राप्त कर लिया।
* 1633 ई॰ में पूर्वी तट पर अंग्रेजों ने अपना पहला कारखाना बालासोर और हरिहरपुर में स्थापित किया।
* 1639 ई॰ में फ्रांसिस डे ने चन्द्रगिरी के राजा से मद्रास को पट्टे पर लेकर वहाँ फोर्ट सेंट जार्ज की स्थापना की।
* 1661 ई॰ में ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितीय से पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह के उपलक्ष्य में अंग्रेजों को बम्बई दहेज में मिला।
* राजा चार्ल्स ने 10 पौंड वार्षिक किराए पर बम्बई को ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सौंप दिया।
* गेराल्ड आंगियार को बम्बई का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

Raj Holkar
KD Job Updates
Scanned by CamScanner

⇒ बंगाल में ब्रिटिश फैक्ट्रियों की स्थापना :-

- बंगाल के सूबेदार शाहशुजा ने 1651 ई० में एक फरमान जारी कर बंगाल में 3000 रु वार्षिक कर के बदले व्यापार का विशेषाधिकार अंग्रेजों को प्रदान किया
- 1651 ई० में ब्रिजमैन के नेतृत्व में बंगाल के हुगली नामक स्थान पर प्रथम अंग्रेजी कारखाने की स्थापना हुई।
- हुगली के बाद कासिम बाजार, पटना एवं राजमहल में अंग्रेजी कारखाने खोले।
- 1686 ई० में अंग्रेजों एवं औरंगजेब की भिडन्त हुई (कारण : हुगली में अंग्रेजों द्वारा लूट) लडाई में अंग्रेजों की हार हुई एवं अंग्रेजों को हुगली से भागना पडा।
- औरंगजेब ने 1,50,000 ₹ हजर्ना लेकर पुनः व्यापार की छूट प्रदान कर दी।
- 1698 ई० में बंगाल के सूबेदार अजीम-उश-शान ने सूतानती, कोलिकाता व गोविन्दपुर की जमींदारी अंग्रेजों को सौंप दी। उस समय सूतानती, कोलिकाता एवं गोविन्दपुर का जमींदार इब्राहिम खाँ था।
- जॉब चारनॉक ने सूतानती, कोलिकाता एवं गोविन्दपुर को मिलाकर एक नए नगर कलकत्ता की नींव रखी। इसी कारण जॉब चारनॉक को कलकत्ता का संस्थापक कहा जाता है।

Raj Holkar

- 1700 ई० में कलकत्ता में फोर्ट विलियम की स्थापना की गयी। इसका गवर्नर चार्ल्स आयर को बनाया गया।
- 1700 ई० में कलकत्ता को पहला प्रेसीडेंसी नगर घोषित किया गया।

⇒ फर्रुखसियार के फरमान :-

- सर्जन हेमिल्टन ने बादशाह फर्रुखसियार को एक दर्दनाक बीमारी से मुक्ति दिलायी इससे प्रसन्न होकर बादशाह ने तीन फरमान जारी किए।
  - बंगाल में 3000 रु वार्षिक कर अदा करने पर कंपनी को उसके समस्त व्यापार में सीमा शुल्क से मुक्त कर दिया गया।
  - कलकत्ता के आसपास 38 गाँव खरीदने का अधिकार मिला
  - बम्बई में ढ़ले सिक्कों को समूचे मुगल साम्राज्य में चलाने के लिए छूट मिली।
  - सूरत में 10,000 ₹ वार्षिक देने पर कंपनी के समस्त आयात निर्यात को कर से मुक्त कर दिया गया।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

डेन

- अंग्रेजों के बाद डेन 1616 ई. में भारत आए।
- डेन लोगों ने अपनी पहली फैक्ट्री की स्थापना 1620 ई० में ट्रावनकोर (तंजौर) में की।
- डेन लोगों ने दूसरी फैक्ट्री 1676 ई. में सेरामपुर (बंगाल) में स्थापित की।
- 1745 ई० में डेन लोगों ने अपनी सभी फैक्ट्री अंग्रेजों को बेच दी एवं भारत छोड़कर चले गए।

फ्रांसीसी

Raj Holkar

* लुई चौदहवें के मंत्री कोलबर्ट ने 1664 ई० में फ्रेंच ईस्ट इण्डिया कंपनी की स्थापना की इसका नाम कम्पने देस इण्दसे ओरियंटलेस रखा गया। यह कंपनी वित्तीय संसाधनों के लिए राज्य पर निर्भर थी।
* 1667 में फ्रेंसिस कैरो के नेतृत्व में एक दल भारत के लिए रवाना हुआ।
* फ्रांसीसियों ने अपना पहला व्यापारिक कारखाना 1668 ई. में सूरत में स्थापित किया। इसका नेतृत्व फ्रेंसिस कैरो ने किया।
* फ्रांसीसियों ने दूसरी फैक्ट्री मुसलीपट्टनम में स्थापित की।
* 1673 ई० में फ्रेंसिस मार्टिन ने सूबेदार (वलिकोण्डापुर) शेरखां लोदी से पर्दुचुरी नामक एक गाँव प्राप्त किया जो बाद में पाँडिचेरी नाम से जाना गया। पांडिचेरी में ही फ्रेंसिस मार्टिन ने फोर्ट लुई का निर्माण किया।
* 1674 ई० में बंगाल के सूबेदार शाइस्ता खां ने एक स्थल फ्रांसीसियों को प्रदान किया जहाँ फ्रांसीसियों ने 1690-92 में फ्रांसीसी कोठी चन्द्रनगर की स्थापना की।
* 1693 ई. में डचों ने अंग्रेजों की सहायता से पॉण्डिचेरी को छीन लिया।
* 1697 ई. में रिजविक की संधि से फ्रांसीसियों को पॉण्डिचेरी पुनः प्राप्त हुआ।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* 1721 ई॰ में फ्रांसीसियों ने मॉरीशस पर अधिकार कर लिया।
* 1724 ई॰ में फ्रांसीसियों ने मालाबार (माही) पर अधिकार कर लिया
* 1739 ई॰ में फ्रांसीसियों ने करिकाल पर अधिकार कर लिया।

अंग्रेज फ्रांसीसी संघर्ष

⇒ पृष्ठभूमि :- भारत में फ्रेंच ईस्ट ईस्ट इण्डिया कंपनी एवं ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना व्यापारिक उद्देश्यों से की गयी थी। शीघ्र ही इन दोनों कंपनियों का उद्देश्य व्यापारिक के साथ राजनैतिक हितों से जुड गया। इस कारण दोनों कंपनियों में टकराव शुरू हो गया इससे एक लंबे संघर्ष का जन्म हुआ जिसे कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना गया।

प्रथम कर्नाटक युद्ध

Raj Holkar

⇒ कारण :- यह युद्ध 1740 में आरंभ हुए ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध का विस्तार मात्र था। इसके तात्कालिक कारण निम्नलिखित थे -

- अंग्रेज कैप्टन बार्नेट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना द्वारा कुछ फ्रांसीसी जलपोतों पर कब्जा कर लिया जाना।
- फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने मॉरीशस के फ्रांसीसी गवर्नर लाबूर्दने की सहायता से मद्रास पर अधिकार कर लेना

सेन्टथोमे का युद्ध :- [अड्यार नदी किनारे]

- यह फ्रांसीसी सेना एवं कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के बीच लडा गया
- इस युद्ध में फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व कैप्टन पैराडाइज ने किया जिसमें फ्रांसीसी सेना की विजय हुई।

⇒ युद्ध की समाप्ति :-

- यूरोप में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध की समाप्ति ए-ला-शापल (एक्स ला शापेल या) की संधि (1748) से हुई प्रभावस्वरूप भारत में भी युद्ध समाप्त हो गया

⇒ परिणाम :-

- दोनों दल बराबर रहे परन्तु स्थल पर फ्रांसीसी श्रेष्ठ रहे।
- मद्रास पुनः अंग्रेजों को प्राप्त हो गया।
- डूप्ले की ख्याति में वृद्धि हुई।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

कर्नाटक का दूसरा युध्द

कारण:-

- डूप्ले की राजनैतिक महत्वाकांक्षा
- कर्नाटक के नवाब के पद के लिए संघर्ष (मुख्य कारण)
- दक्कन के सूबेदार का पद

⇒ **अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों का समर्थन:-**

i) कर्नाटक के नवाब के लिए : फ्रांसीसी - चाँद साहब
अंग्रेज - अनवरूद्दीन

ii) दक्कन के सूबेदार के लिए : फ्रांसीसी - मुजफ्फर जंग
अंग्रेज - नासिर जंग

⇒ **घटनाक्रम:-**

Raj Holkar

अम्बूर का युध्द:- अगस्त, 1749 में

- मुजफ्फर जंग, चन्दा साहिब एवं फ्रांसीसी सेना संयुक्त रूप से अनवरुद्दीन को हरा दिया एवं मार डाला।
- चंदा साहिब/चाँद साहब कर्नाटक का नवाब एवं मुजफ्फर जंग दक्कन का सूबेदार बन गया। चंदा साहिब ने अर्काट को अपनी राजधानी बनाया।

त्रिचनापल्ली के लिए संघर्ष:-

- अम्बूर के युध्द के बाद अर्काट को राजधानी बनाया गया शीघ्र ही अंग्रेजों ने अर्काट को जीत लिया।
- त्रिचनापल्ली अंग्रेजों के अधिकार में था जिसे फ्रांसीसी जीतना चाहते थे। 1752 ई॰ में स्ट्रिंगर लॉरेंस (अंग्रेजी सेना नेतृत्व कर्ता) के सामने फ्रांसीसी सेना ने हथियार डाल दिये। फ्रांसीसी सेना की पराजय हुई।
- चंदा साहिब की हत्या तंजौर के राजा ने कर दी।

Raj Holkar

⇒ **परिणाम :-**

- डूप्ले को फ्रांस वापस बुला लिया गया।
- 1755 में पाँडिचेरी की संधि के तहत दोनों दल राजाओं के आपसी झगडों से दूर रहने के लिए राजी हुए।
- मुहम्मद अली कर्नाटक का नवाब बना।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

कर्नाटक का तृतीय युद्ध

⇒ कारण :-

- 1756 ई. में यूरोप में सप्तवर्षीय संघर्ष के आरम्भ होते ही भारत में अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों के बीच शांति समाप्त हो गयी।
- युद्ध का तात्कालिक कारण क्लाइव और वाट्सन द्वारा बंगाल स्थित चन्द्रनगर पर अधिकार करना था।
- 1757 में अंग्रेजों ने चन्द्रनगर/बालासोर/कासिमबाजार/पटना की फ्रांसीसी फैक्ट्रियों पर अधिकार कर लिया।

वांडीवाश का युद्ध : [1760 ई.]

* इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व आयरकूट ने एवं फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व काउंट द लाली ने किया।
* इस युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को पराजित किया।
* इस युद्ध में हार के बाद भारत में फ्रांसीसियों का अस्तित्व लगभग समाप्त हो गया।

Raj Holkar

⇒ भारत में फ्रांसीसियों की हार के कारण :-

- फ्रांसीसी कंपनी सरकारी थी। इसके लाभ एवं हानि के प्रति कंपनी के डायरेक्टर उदासीन थे।
- यूरोप में संघर्ष में फ्रांसीसियों का उलझे रहना। भारत में कंपनी की गतिविधियों पर अधिक ध्यान न देना।
- अंग्रेजों का बंगाल पर अधिकार था जहाँ से अंग्रेजों को अपार धन की प्राप्ति हुई। जबकि फ्रांसीसियों के पास पाण्डिचेरी एवं अन्य ऐसे स्थान थे जहाँ से सीमित सीमा में धन प्राप्त होता था।
- फ्रांस की नौसेना शक्ति समाप्त हो जाना।
- अंग्रेजी कम्पनी का राजनैतिक तथा सैनिक नेतृत्व फ्रांसीसी कंपनी की अपेक्षा अधिक उत्तम था।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

मुगल साम्राज्य का पतन

⇒ पतन के कारण :-

- औरंगजेब की नीतियां
- औरंगजेब के नि:शक्त उत्तराधिकारी
- दरबार में गुटबंदी
- मराठों का उत्थान
- नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण
- यूरोपवासियों का आगमन
- विशाल साम्राज्य के लिए स्थिर केन्द्रीय प्रशासन का अभाव

Raj Holkar

उत्तरकालीन मुगल सम्राट

Raj Holkar

* 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के लिए उसके पुत्रों में युद्ध हुआ।
* मुहम्मद मुअज्जम, मुहम्मद आजम एवं कामबख्श में उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ जिसमें मुहम्मद मुअज्जम ने विजय प्राप्त की। मुहम्मद मुअज्जम ने -
  - 18 जून, 1707 में जजाओं के स्थान पर मुहम्मद आजम को हराया।
  - 13 जनवरी 1709 में हैदराबाद के समीप कामबख्श को हराकर मार डाला।
* 1707 में मुहम्मद मुअज्जम (शाह आलम-I) बहादुर शाह प्रथम के नाम से सिंहासन पर बैठा।

⇒ बहादुर शाह प्रथम (शाह आलम-I) [1707 से 1712] :- उपाधि: शाह-ए-बेखबर (खफी खां द्वारा)

- यह 63 वर्ष की उम्र में सम्राट बना। इसने शांतिप्रिय नीति अपनायी
- इसने 1689 से मुगलों की कैद में रह रहे शिवाजी के पौत्र शाहू जी को मुक्त कर दिया एवं मराठों से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए।
- इसके समय में सिक्ख नेता बंदा बहादुर ने 1710 में सरहिन्द को जीत लिया परन्तु 1711 में मुगलों ने पुन: सरहिन्द को जीत लिया।
- इसके दरबार में 1711 में एक डच शिष्टमण्डल आया। इनके स्वागत में एक पुर्तगाली स्त्री ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस पुर्तगाली स्त्री जूलियाना को बीबी एवं फिदवा की उपाधि दी गयी।

Scanned by CamScanner

- बहादुरशाह प्रथम के लिए सर सिडनी ओवल का कथन - "यह अंतिम मुगल सम्राट था जिसके विषय में कुछ अच्छे शब्द कहे जा सकते हैं।"
- बहादुर शाह प्रथम की मृत्यु 27 फरवरी, 1712 में हो गयी एवं एक बार फिर उत्तराधिकार का युद्ध प्रारंभ हो गया।
- उत्तराधिकार के लिए युद्ध के कारण बहादुरशाह का शव एक मास तक भी दफन नहीं किया गया।

उत्तराधिकार का युद्ध :-

* बहादुर शाह प्रथम के चार पुत्रों - जहाँदार शाह, अजीम-उस-शान, रफी-उस-शान और जहान शाह के बीच उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ।
* ईरानी दल के नेता जुलफिकार खाँ की सहायता से जहाँदार शाह सम्राट बना।

⇒ जहाँदार शाह :- (1712-13) Raj Holkar

- इसका वास्तविक शासन इसके प्रधानमंत्री (वजीर) जुलफिकार खाँ के हाथ में था।
- जहाँदार शाह ने आमेर के राजा सवाई जयसिंह को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया एवं 'मिर्जा' की उपाधि प्रदान की।
- इसने मारवाड के राजा अजीत सिंह को गुजरात का सूबेदार बनाया एवं इसे 'महाराजा' की उपाधि प्रदान की।
- जहाँदार शाह के समय जजिया कर समाप्त कर दिया गया था।
- जहाँदार शाह लालकुंवरी नामक वेश्या से प्रेम करता था।
- जहाँदार शाह ने मराठों को दक्कन में चौथ एवं सरदेशमुखी वसूल करने का अधिकार प्रदान किया परन्तु इसकी वसूली मुगल अधिकारी करते थे।
- इस सम्राट को इतिहास में लम्पट मूर्ख कहा जाता है।
- फर्रुखसियार ने सैयद बंधुओं की सहायता से 11 फरवरी, 1713 में सम्राट को पराजित कर मार डाला।

खफी खाँ का कथन :- "नया शासनकाल चारणों और गायकों, नर्तकों एवं नाट्य कर्मियों के समस्त वर्गों के लिए बहुत अनुकूल युग था।"

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ **फर्रुखसियार :- (1713-19)**

* यह मुगल दरबार के हिन्दुस्तानी दल के नेता सैय्यद बंधु अब्दुल्ला खाँ और हुसैन अली की सहायता से सिंहासन पर बैठा।
* इसने अब्दुल्ला खाँ को प्रधानमंत्री (वजीर) का पद एवं हुसैन अली को मीर बख्शी नियुक्त किया।

फर्रुखसियार द्वारा अब्दुल्ला खां को दी गयी उपाधियां: नवाब कुत्ब उल मुल्क, यमीन उद्दौला, सैयद अब्दुल्ला खां बहादुर, जफर जंग, सिपहसालार एवं यार-ए-वफादार।

हुसैन अली को दी गयी उपाधियां: उमादतुल मुल्क, अमीर-उल-उमरा, बहादुर फिरोज जंग एवं सिपहसरदार।

* सिक्ख नेता बंदा बहादुर की फर्रुखसियार के समय हत्या कर दी गयी।
* सैयद बंधुओं ने मराठा पेशवा बालाजी विश्वनाथ की सहायता से फर्रुखसियार की हत्या कर दी।
* फर्रुखसियार को घृणित कायर कहा जाता है।

Raj Holkar

⇒ **रफी-उद-दरजात :- (28 फरवरी से 4 जून, 1719)** Raj Holkar

* यह सबसे कम समय तक शासन करने वाला मुगल सम्राट था।
* यह भी सैयद बंधुओं की सहायता से सिंहासन पर बैठा था।

⇒ **रफी-उद-दौला :- (6 जून से 17 सितंबर, 1719)**

* यह भी सैयद बंधुओं की सहायता से सिंहासन पर बैठा था।
* इसने शाहजहां द्वितीय की उपाधि धारण की।

⇒ **मुहम्मद शाह (रौशन अख्तर) :- (1719-1748)**

* रौशन अख्तर ने 'मुहम्मद शाह' की उपाधि के साथ सैयद बंधुओं की सहायता से सिंहासन प्राप्त किया।
* इसके काल में सैयद बंधुओं का अंत हुआ। [1722 में हत्या करवा दी]
* इसके समय में नादिरशाह का आक्रमण (1739) हुआ।
* मयूरसिंहासन पर बैठने वाला यह अंतिम शासक था।
* इसके समय में बंगाल, अवध, हैदराबाद, स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* मुहम्मद शाह के शासन काल में ही अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण (1748 ई०) किया। अहमद शाह अब्दाली, नादिरशाह का उत्तराधिकारी था।
* मुहम्मद शाह ने 1720 ई. में जजिया कर को अंतिम रूप से प्रतिबंधित कर दिया

⇒ नादिरशाह का आक्रमण (1739 ई०):-

* नादिरशाह को ईरान का नेपोलियन कहा जाता था। यह फारस का शासक था।
* नादिरशाह, तहमास्पशाह की मृत्यु के बाद 1736 में फारस का शासक बना।
* नादिरशाह ने 11 जून 1738 में गजनी में प्रवेश किया। काबुल के शासक ने नादिर खां ने बिना प्रतिरोध अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार 29 जून को नादिरशाह ने काबुल पर अधिकार कर लिया।
* नादिरशाह ने अटक के स्थान पर सिन्धु नदी पार किया और लाहौर पर कब्जा कर लिया।
* फरवरी, 1739 ई. में नादिरशाह ने पंजाब पर आक्रमण किया और करनाल का युद्ध हुआ।

Raj Holkar

Raj Holkar

करनाल का युद्ध :-

- मुगल सम्राट नादिरशाह को रोकने के लिए निजामुल मुल्क, कमरुद्दीन, खान दौरान एवं सआदत खां के साथ पंजाब की ओर आगे बढ़ा।
- मुगल सेना न तो युद्ध के लिए तैयार थी और न ही कोई रणनीति थी इस कारण यह युद्ध मात्र 3 घण्टे चला खान दौरान युद्ध में मारा गया एवं सआदत खां को बन्दी बना लिया गया।
- निजामुलमुल्क ने शांतिदूत की भूमिका निभाते हुए नादिरशाह को 50 लाख रुपये देना तय किया।
- सआदत खां के स्थान पर निजामुलमुल्क को मीरबख्शी बनाए जाने के कारण सआदत खां नादिर शाह से जा मिला एवं उसे दिल्ली पर आक्रमण करने का प्रलोभन दिया।
- 20 मार्च, 1739 को नादिरशाह दिल्ली पहुंचा।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

नादिरशाह का दिल्ली में प्रवेश :-

- 20 मार्च, 1739 को वह दिल्ली पहुंचा एवं अपने नाम का खुतबा पढ़वाया तथा अपने नाम के सिक्के जारी किए।
- दिल्ली में यह अफवाह फैल गयी कि नादिरशाह की मृत्यु हो गयी इस वजह से दिल्ली में नादिरशाह के 700 सैनिक मार दिए गए। इससे क्रोधित होकर नादिरशाह ने कत्लेआम का हुकम दे दिया जिसमें 30,000 व्यक्ति हताहत हुए। मुहम्मद शाह की प्रार्थना पर नादिरशाह ने यह आज्ञा वापस ली।

नादिरशाह की वापसी :-

Raj Holkar

- दिल्ली से वापस लौटते समय नादिरशाह अपने साथ 30 करोड़ रूपये नकद और सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात के अतिरिक्त 100 हाथी, 7000 घोड़े, 100 हिजड़े, 10,000 ऊँट, 130 लेखपाल, 200 लोहार, 100 पत्थर तराश और 200 बढ़ई लेकर गया।
- नादिरशाह, शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया तख्ते ताउस (मयूर सिंहासन) एवं साथ में कोहिनूर हीरा अपने साथ ले गया।
- मुगल सम्राट ने अपनी पुत्री का विवाह नादिरशाह के पुत्र नसीरुल्लाह मिर्जा से कर दिया।

Raj Holkar

- कश्मीर तथा सिंध नदी के पश्चिमी प्रदेश नादिरशाह को मिल गये।
- नादिशाह ने मुहम्मद शाह को पुनः मुगल साम्राज्य का सम्राट घोषित कर दिया। खुत्बा पढ़ने एवं सिक्के चलाने के अधिकार लौटा दिए।

⇒ सम्राट अहमदशाह :- (1748-1754)

- यह मुहम्मद शाह का पुत्र था जो ऊधम बाई नर्तकी के गर्भ से जन्मा था।
- इसके शासनकाल में अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया।
- इसने अपने प्रिय हिंजड़ों के सरदार जाबिद खां/जावेद खां को नवाब बहादुर की उपाधि प्रदान की।
- अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर कुल 7 बार आक्रमण किया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ आलमगीर द्वितीय :- (1754 - 1758)

- इसका नाम अजीमुद्दीन था।
- यह अपने वजीर इमादुल मुल्क का कठपुतली शासक था।
- 1757 में दिल्ली से वापस लौटते समय अहमद शाह अब्दाली ने आलमगीर-II को सम्राट बनाया था।

अहमदशाह अब्दाली के भारत पर आक्रमण :-

Raj Holkar

- 1747 में नादिरशाह की हत्या कर दिए जाने के बाद अहमदशाह अब्दाली कन्धार का स्वतंत्र शासक बन गया। अब्दाली ने शीघ्र ही काबुल को जीत लिया और आधुनिक अफगान राज्य की नींव रखी।
- अब्दाली ने भारत पर कुल 7 बार आक्रमण किए।
- 1748 में अब्दाली का पहला आक्रमण पंजाब पर था जो असफल रहा।
- 1749 में पंजाब पर पुनः आक्रमण कर पंजाब गवर्नर मुइनुल मुल्क को परास्त किया।
- 1752 में पंजाब पर तीसरा आक्रमण किया। सम्राट ने अब्दाली को पंजाब और सिंध का प्रदेश दे दिया।
- जनवरी, 1757 में अब्दाली ने दिल्ली में प्रवेश किया तथा मथुरा एवं आगरा तक लूटपाट की। यहां से वापस लौटते समय अब्दाली ने आलमगीर द्वितीय को सम्राट, इमादुल मुल्क को वजीर एवं रुहेला सरदार नजीबुद्दौला को मीर [redacted] बख्शी और अपना मुख्य एजेण्ट बनाया था।
- 14 जनवरी, 1761 को अहमदशाह अब्दाली एवं मराठों के बीच पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ जिसमें मराठों की हार हुई।
- पानीपत के युद्ध के बाद अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली छोड़ने से पहले पुनः शाह आलम को सम्राट इमादुल मुल्क को वजीर एवं नजीबुद्दौला को मीर बख्शी नियुक्त किया।

नोट:- पानीपत के तीसरे युद्ध के समय मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय था।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ शाह आलम द्वितीय :- [1759-1806 ई.]

- आलमगीर द्वितीय की हत्या के बाद शाह आलम द्वितीय मुगल सम्राट बना।
- शाह आलम द्वितीय का नाम अली गौहर था।
- इसके समय में पानीपत का तीसरा युद्ध (1761) एवं बक्सर का युद्ध (1764) हुआ। बक्सर के युद्ध में शाह आलम-II ने बंगाल के नवाब मीर कासिम का साथ दिया था।
- बक्सर के युद्ध के बाद अंग्रेजों ने शाह आलम को पेंशनभोगी बना दिया था।
- 1772 ई. में [redacted] ने मराठा संरक्षण में शाह आलम-II को पुनः सिंहासन पर बैठाया।
- 30 ~~अगस्त~~ जुलाई 1788 को गुलाम कादिर ने शाह आलम को सिंहासन से उतार दिया और 10 अगस्त, 1788 को शाह आलम की आँखें निकलवाकर अंधा बना दिया।
- अक्टूबर, 1788 में महादजी सिंधिया ने पुनः सम्राट की ओर से अधिकार कर लिया।
- 1803 में अंग्रेज सेनापति लेक ने दौलतराव सिंधिया को पराजित किया एवं शाह आलम-II ने अंग्रेजों का संरक्षण स्वीकार कर लिया। इस प्रकार 1803 ई. में दिल्ली पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। मुगल सम्राट अब पेंशनभोक्ता बन गया।
- शाह आलम-II ने अंधे शासक के रूप में राज किया।

Raj Holkar

⇒ अकबर शाह द्वितीय :- (1806-37)

Raj Holkar

- 1806 ई. में शाह आलम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अकबर शाह द्वितीय शासक बना।
- अंग्रेजों के संरक्षण में गद्दी पर बैठने वाला यह प्रथम शासक था।
- यह अंग्रेजों की पेंशन पर शासन करने वाला शासक था।
- अकबर-II ने राम मोहन राय को राजा की उपाधि प्रदान की एवं पेंशन हेतु ब्रिटेन भेजा था।
- इसके शासन काल में मुगलों के सिक्के बन्द हो गए।
- 1837 में अकबर शाह-II की मृत्यु हो गयी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ बहादुर शाह द्वितीय 'जफर' :- [1837-1857 ई॰]

- बहादुर शाह द्वितीय अंतिम मुगल सम्राट था।
- जफर इसका उपनाम था। यह जफर नाम से कविता और शायरी लिखता था
- यह अंग्रेजों की पेंशन पर शासन करता था।
- 1857 की क्रांति में क्रांतिकारियों ने मुहम्मद शाह जफर को अपना सम्राट घोषित कर दिया। क्रांतिकारियों की सहायता करने के कारण अंग्रेजों ने मुहम्मद शाह जफर को निर्वासित कर रंगून भेज दिया।
- रंगून में अपने निर्वासित काल के दौरान बहादुर शाह जफर ने अपनी प्रसिद्ध कविता - " न किसी की आंख का नूर हूँ, न किसी के दिल का करार हूँ।
  जो किसी के काम न आ सका, मैं वो बुझता हुआ चिराग हूँ।।"
  लिखी थी। 1862 ई॰ में जफर की मृत्यु हो गयी।
- 1 नवम्बर, 1858 को महारानी विक्टोरिया के घोषणा पत्र से कानूनी रूप से मुगल साम्राज्य का अंत हो गया।

Raj Holkar

18वीं शताब्दी में भारतीय समाज

Raj Holkar

- समाज में सबसे महत्वपूर्ण स्थान सम्राट का था।
- हिन्दु समाज में जाति प्रथा का बहुत महत्व था।
- स्त्रियों का समाज एवं घर में सम्मान था परन्तु समानता की भावना नहीं थी।
- मालाबार एवं कुछ क्षेत्रों को छोड़कर हिन्दु समाज पितृ प्रधान था।
- हिन्दु एवं मुसलमान स्त्रियां परदा करती थी।
- बाल विवाह प्रथा प्रचलित थी यद्यपि गौना वयस्क होने पर होता था।
- ऊँचे वर्गों में दहेज प्रथा प्रचलित थी।
- राजवंशों, बड़े जमींदारों तथा धनाढ्य घरों में बहु पत्नी प्रथा प्रचलित थी परन्तु साधारण लोग एक विवाह ही करते थे।
- द्विजों में विधवा विवाह प्राय: नहीं होता था। पेशवाओं ने विधवाओं के पुनर्विवाह पर पतदाम नाम का एक कर भी लगाया था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

- बंगाल, मध्य भारत, राजस्थान इत्यादि के उच्च हिन्दु कुलों में सती प्रथा भी प्रचलित थी।
- समाज में दास प्रथा प्रचलित थी।
- हिन्दु एवं मुसलमानों में शिक्षा के प्रति विशेष रुचि रही परन्तु भारतीय शिक्षा का उद्देश्य संस्कृति था साक्षरता नहीं।
- संस्कृत के उच्च अध्ययन के केन्द्रों को बंगाल, बिहार, नदिया तथा काशी में तोल अथवा चतुष्पाठी कहा जाता था।
- फ्रांसीसी पर्यटक बरनियर ने काशी को भारत का एथेंस कहा है।
- विद्या का प्रचलन प्राय: उच्च वर्णों में ही था परन्तु निम्न वर्णों के बालक भी विद्या प्राप्त कर लेते थे।
- स्त्री शिक्षा अभीष्ट नहीं थी।

Raj Holkar

- सवाई जयसिंह ने जयपुर, बनारस, दिल्ली आदि नगरों में 5 वेधशालाएँ बनवायी थीं।
- भारतीय अर्थव्यवस्था की आधार इकाई ग्राम थी।
- नगरों में हस्तशिल्प का स्तर बहुत विकसित हो चुका था। भारतीय माल की संसार की सभी मंडियों में माँग थी।

Raj Holkar

भारत के प्रमुख हस्तशिल्प केन्द्र -

* ढाका, अहमदाबाद तथा मसूलीपत्तनम - सूती कपडा
* मुर्शिदाबाद, आगरा, लाहौर, गुजरात - रेशमी माल
* कश्मीर, लाहौर, आगरा - ऊनी शॉल, गलीचे

- भारत में व्यापारी पूंजीपतियों का विकास एवं बैंक पध्दति का विकास हो चुका था।
- उत्तरी भारत में जगत सेठों तथा दक्षिणी भारत में चेट्टियों का उदय हुआ।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

- 18 वीं सदी का भारत विषमताओं का देश हो गया था। अत्यंत गरीबी एवं अत्यंत समृद्धि दोनों साथ-साथ पायी जाती थी।
- 18 वीं सदी में भारतीय जनता का जीवन उतना खराब नहीं था जितना 19 वीं सदी के अंत में ब्रिटिश ~~खराब~~ शासन में खराब हुआ।
- भारतीय कृषि तकनीकी रूप से जडवत थी।

Raj Holkar

आयात की वस्तुएं: मोती, कच्चा रेशम, ऊन, खजूर, मेवे, कहवा, सोना, शहद, चाय, चीनी, कस्तूरी, टिन (सिंगापुर से), मसाले, इत्र, शराब, चीनी (इंडोनेशिया से), कागज आदि के साथ। हाथी दांत (अफ्रीका), तांबा, लोहा और सीसा (यूरोप) से।

निर्यात की वस्तुएं:- निर्यात की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु सूती वस्त्र थी।
कच्चा रेशम, रेशमी कपडे, लोहे का सामान, नील, शोरा, अफीम, चावल, गेहूँ, चीनी, काली मिर्च, मसाले, रत्न, औषधियाँ।

- 18 वीं सदी में भारत का निर्यात, भारत के आयात से अधिक था। विदेश व्यापार को चांदी एवं सोने के आयात द्वारा संतुलित किया जाता था।

Raj Holkar

- 18 वीं सदी में देश का आंतरिक व्यापार प्रतिकूल रूप से प्रभावित था।
- महाराष्ट्र, आंध्र एवं बंगाल में जहाज निर्माण उद्योग विकसित हुआ।
- 18 वीं सदी की औसत साक्षरता ब्रिटिश शासन काल की अपेक्षा कम नहीं थी।
- जाति नियम अत्यंत कठोर थे अंतर्जातीय विवाह निषेध था।
- 18 वीं सदी में परिवार व्यवस्था पितृसत्तात्मक थी परन्तु केरल में परिवार मातृ प्रधान था।
- पर्दा प्रथा केवल उत्तर भारत में प्रचलित थी दक्षिण भारत में नहीं।
- बाल विवाह प्रथा पूरे देश में प्रचलित थी।
- सती प्रथा दक्षिण भारत में प्रचलित नहीं थी।
- आमेर के राजा सवाई जयसिंह और मराठा सेनापति परशुराम भाऊ ने विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा देने की कोशिश की परन्तु सफल नहीं हो सके।
- पंजाबी महाकाव्य हीर-रांझा की रचना वारिस शाह ने इसी काल में की।
- 18 वीं सदी में हिन्दु एवं मुसलमान में मित्रतापूर्ण रहे।
- सामंत एवं सरदारों की लडाइयाँ एवं राजनीति धर्म निरपेक्ष थी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

नवीन राज्यों का उत्थान

⇒ कारण :-

- 18वीं सदी में मुगल साम्राज्य की शिथिलता से राजनैतिक शून्य स्थिति
- मुगल सूबेदारों एवं प्रादेशिक सरदारों की अर्द्ध स्वतंत्र अथवा स्वतंत्र राज्य बनाने की महत्वाकांक्षा - बंगाल, अवध, हैदराबाद, मैसूर आदि।
- मुगल शासन के खिलाफ स्थानीय सरदारों, जमींदारों तथा किसानों का विद्रोह एवं स्वतंत्र राज्यों की स्थापना - मराठा, अफगान, पंजाब एवं जाट आदि।
- सुदूरवर्ती क्षेत्रों में मुगल प्रभाव का अभाव

Raj Holkar

हैदराबाद

* हैदराबाद के आसफजाही वंश का प्रवर्तक चिनकिलिच खाँ (निजामुल मुल्क) था।
* दक्कन में स्वतंत्र राज्य का पहली बार कोशिश करने वाला जुल्फिकार खाँ था (1708 में)
* 1713 में जुल्फिकार खां के बाद निजामुल मुल्क दक्कन का वायसराय बना।
* 1715 में सैय्यद हुसैन अली को दक्कन का वायसराय बनाया गया।
* हुसैन अली की मृत्यु के बाद पुनः चिनकिलिच खां दक्कन का सूबेदार बना।

Raj Holkar

⇒ सकूरखेडा युध्द (अक्टूबर, 1724) :-

पृष्ठभूमि : मुगल सम्राट मुहम्मद शाह ने मुबारिज खां को दक्कन का वायसराय बनाया और आदेश दिया कि वह चिनकिलिच खां (निजामुल मुल्क) को जीवित अथवा मृत सम्राट के सम्मुख उपस्थित करे।

युध्द :- सकूरखेडा का युध्द मुबारिज खां एवं निजामुल मुल्क के बीच लडा गया जिसमें मुबारिज खां मारा गया एवं निजाम दक्कन का स्वामी बन गया।

परिणाम : सम्राट ने विवश होकर निजामुल मुल्क को दक्कन का वायसराय नियुक्त कर दिया एवं आसफजाह की उपाधि प्रदान की।

* इस प्रकार, निजामुल मुल्क आसफजाह ने 1724 में हैदराबाद राज्य की स्थापना की।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

अवध

* अवध के स्वतंत्र राज्य की स्थापना सआदत खाँ (बुरहान मुल्क) ने की।
* अवध के स्वतंत्र राज्य के निर्माण के समय मुगल सम्राट मुहम्मद शाह था।
* अवध में नया राजस्व ~~बंदो~~ बंदोवस्त करने वाला नवाब सआदत खाँ था।
* अबुल मंसूर / सफदर जंग, मुगल सम्राट मुहम्मद शाह के फरमान से अवध का नवाब नियुक्त हुआ।
* सफदरजंग ने अहमदशाह अब्दाली और मुगलों के बीच लड़े गये युद्ध में मुगलों का साथ दिया था।
* सफदरजंग की सेना में सर्वोच्च पद पर एक हिन्दु नवाब राय था।
* अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने मुगल बादशाह शाह आलम -II (अली गौहर) को लखनऊ में शरण दी।
* पानीपत के तीसरे युद्ध में शुजाउद्दौला ने अहमदशाह अब्दाली का साथ दिया।
* बक्सर के युद्ध (1764 ई०) में अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने अंग्रेजो के खिलाफ बंगाल के अपदस्थ नवाब मीरकासिम तथा मुगल सम्राट शाह आलम -II का साथ दिया।

Raj Holkar

⇒ **बनारस की संधि (1773 ई०) :-**

- यह संधि अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं वारेन हेस्टिंग्स के बीच हुई।
- इस संधि द्वारा इलाहबाद एवं कड़ा जिले अंग्रेजों द्वारा अवध के नवाब को 50 लाख रुपये में बेचे गये।

⇒ **फैजाबाद की संधि (1775 ई०) :-**

- बनारस पर अंग्रेजी सर्वोच्चता स्थापित हो गयी।
- वारेन हेस्टिंग्स ने अवध की बेगमों की संपत्ति की सुरक्षा की गारंटी दी।

Raj Holkar

* आसफुद्दौला ने लखनऊ में बड़ा इमामबाड़ा बनवाया।
* लार्ड वेलेजली से सहायक संधि करने वाला अवध का नवाब सआदत अली खां था। [1801 ई० में संधि की]
* गाजीउद्दीन हैदर अली खां को वारेन हेस्टिंग्स ने 1815 ई० में बादशाह की उपाधि प्रदान की।
* अवध का अंतिम नवाब वाजिद अली शाह था।
* 1854 ई० में आउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर लार्ड डलहौजी ने अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दिया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

जाट

* जाट दिल्ली, आगरा एवं मथुरा के आस पास के इलाकों (आगरा, मथुरा, मेरठ, अलीगढ़) में रहने वाले खेती करने वाले लोग थे।

* सर्वप्रथम मथुरा के आसपास 1669 में गोकुल नाम के किसान ने विद्रोह किया फिर 1688 ई. में जमींदार राजाराम के नेतृत्व में विद्रोह हुआ।

* चूड़ामन ने भरतपुर राज्य की नींव डाली बाद में बदनसिंह ने राज्य को सुदृढ़ किया।

* जाट सत्ता सूरजमल के नेतृत्व में अपनी उच्चतम गरिमा पर पहुंच गयी।

Raj Holkar

⇒ लोहागढ़ किला, भरतपुर :-

- लोहागढ़ किले का निर्माण 1733 ई. में जाट महाराजा सूरजमल ने करवाया।
- लोहागढ़ किले को भारत का एकमात्र अजेय दुर्ग कहा जाता है इस दुर्ग को अंग्रेज, मुगल, मराठा एवं राजपूत कोई नहीं जीत पाया।
- लोहागढ़ किले में मुगलों से जीतकर लाया हुआ अष्टधातु का दरवाजा लगा है। इस दरवाजे को जाट महाराजा जवाहर सिंह द्वारा लगवाया गया।

अष्टधातु का दरवाजा एवं इसका इतिहास :-

- कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार इसका वजन 20 टन था।
- मूल रूप से यह दरवाजा चित्तौड़गढ़ के किले में लगा हुआ था परन्तु अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड़गढ़ आक्रमण के बाद इस दरवाजे को चित्तौड़ से उखाड़कर दिल्ली के लाल किले में लगा दिया गया।
- सन् 1765 में भरतपुर के महाराजा जवाहर सिंह ने दिल्ली के शासक नजीबुद्दौला को पराजित किया एवं दरवाजे को उखाड़कर भरतपुर ले आए

Raj Holkar

* महाराजा सूरजमल को जाटों का आफलातून (प्लेटो) कहा जाता है।

* अहमदशाह अब्दाली ने जाट राजा बदनसिंह को राज की उपाधि दी जो बाद में महेन्द्र राज कहलाए।

* 1805 ई. में रणधीर सिंह ने अंग्रेजों की सत्ता स्वीकार कर ली एवं अंग्रेजों की अधीनता को स्वीकार किया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

पंजाब

* पंजाब में सिख धर्म की शुरुआत गुरु नानक देव ने 15 वीं शताब्दी में की।
* सिख धर्म में कुल 10 गुरु हुए हैं।
* गुरुनानक देव इब्राहिम लोदी के समकालीन थे इन्होंने नानक पंथ की स्थापना की
* गुरु अंगद ने गुरु मुखी लिपि का आविष्कार किया।
* गुरु रामदास अकबर के समकालीन थे। अकबर ने गुरु रामदास के लिए 500 बीघा जमीन प्रदान की। इसी भूमि पर गुरु रामदास ने रामदास पुर नगर बसाया जो बाद में अमृतसर नामक शहर के रूप में जाना गया।
* गुरु अर्जुनदेव ने रामदासपुर में अमृतसर नामक तालाब का निर्माण करवाया एवं इस तालाब में हरमंदिर साहब गुरुद्वारे का निर्माण करवाया।
* गुरु अर्जुनदेव ने तरनतारन, करतारपुर एवं गोविन्दपुर नामक शहर बसाए।
* गुरु अर्जुनदेव ने सिखों के आदिग्रंथ की रचना की।
* सिखों को लड़ाकू जाति के रूप में परिवर्तन करने का कार्य गुरु हरगोविन्द ने शुरु किया तथा गुरु गोविन्द सिंह के नेतृत्व में सिख खालसा पंथ की स्थापना हुई एवं सिख राजनैतिक एवं फौजी ताकत बने।
* सिखों के दसवें एवं अंतिम गुरु गोविन्द सिंह ने आनन्दपुर नगर बसाया।
* गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। इनकी हत्या महाराष्ट्र के नांदेड नामक स्थान पर अजीम खान पठान द्वारा की गयी।
* सिखों का प्रथम राजनैतिक नेता बंदा बहादुर / लक्ष्मणदेव / माधवदास था। बंदा बहादुर ने प्रथम सिख राज्य की स्थापना की।
* 18वीं सदी में पंजाब छोटे-छोटे सिख राज्यों में बंटा हुआ था इन राज्यों को मिसल कहा जाता था। पंजाब में कुल 12 मिसल थे। Raj Holkar

⇒ महाराजा रणजीत सिंह :-

* रणजीत सिंह सुकरचकिया मिसल में जन्मे थे। इनके पिता का नाम महासिंह था।
* आधुनिक पंजाब के निर्माण का श्रेय सुकरचकिया मिसल को दिया जाता है।
* रणजीत सिंह ने 1799 में लाहौर और 1802 में अमृतसर पर कब्जा किया बाद में कश्मीर, पेशावर एवं मुल्तान को भी जीत लिया।
* रणजीत सिंह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* 1808 में रणजीत सिंह ने सतलज के पार फरीदकोट, मुलेरकोटला एवं अम्बाला पर कब्जा कर लिया।

अमृतसर की संधि (1809 ई॰):-

- अमृतसर की संधि चार्ल्स मेटकॉफ एवं रणजीत सिंह के बीच 1809 ई॰ में हुई।
- संधि के अनुसार, रणजीत सिंह के सतलज नदी के पूर्वी तट पर विस्तार को सीमित कर दिया गया किन्तु उत्तर में राज्य विस्तार कर सकता था।

* रणजीत सिंह ने 1818 में मुल्तान, 1819 में कश्मीर एवं 1823 में पेशावर पर अधिकार कर लिया।
* काबुल के शासक जमनशाह ने रणजीत सिंह को राजा की उपाधि प्रदान की थी।
* 1809 ई॰ में रणजीत सिंह ने लाहौर के अपदस्थ शासक शाहशुजा को पुनः सत्तासीन करने में सहायता दी। इसी सहायता के बदले शाहशुजा ने रणजीत सिंह को कोहिनूर हीरा दिया जिसे नादिरशाह लाल किले से लूटकर ले गया था।
* रणजीत सिंह भारत के ऐसे प्रथम शासक थे जिन्होंने अंग्रेजों से सहायक संधि को स्वीकार नहीं किया।
* फ्रांसीसी यात्री विक्टर जैक्वीमो ने रणजीत सिंह की तुलना नेपोलियन बोनापार्ट से की थी।

Raj Holkar

रणजीत सिंह का प्रशासन :-

- रणजीत सिंह ने ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी सैन्य व्यवस्था के आधार पर कुशल, प्रशिक्षित एवं सुसंगठित सेना का गठन किया।
- रणजीत सिंह की स्थायी सेना को फौज-ए-आइन नाम से जाना जाता था इनकी सेना एशिया में दूसरे स्थान पर थी (प्रथम: ईस्ट इंडिया कंपनी)
- रणजीत सिंह ने लाहौर में तोपखाने का निर्माण करवाया।
- रणजीत सिंह की सरकार को सरकार ए खालसा नाम दिया। इन्होंने नानकशाही सिक्के चलाए।

⇒ प्रथम आँग्ल-सिख युद्ध (1845-46) :-

- इस समय पंजाब का शासक रणजीत सिंह का अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह था।
- इस समय भारत में गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंग्ज था।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

- प्रथम आंग्ल सिख युद्ध में पंजाब की सेना (सिख सेना) का नेतृत्व लालसिंह एवं अंग्रेजी सेना का नेतृत्व लार्ड ह्यूगफ ने किया।
- इस युद्ध में सिख सेना पराजित हुई तथा अंग्रेजों के साथ 8 मार्च, 1846 में लाहौर की संधि हुई।
- अंग्रेजों ने 50,000 रु. में कश्मीर को गुलाब सिंह को बेच दिया।

द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध (1848-49) :-

- इस समय पंजाब का शासक दिलीप सिंह था एवं भारत का गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी था।
- सिख सेना का नेतृत्व शेर सिंह ने किया।

Raj Holkar

i) रामनगर की लड़ाई : अंग्रेजों का नेतृत्व जनरल गॉफ ने किया। यह युद्ध अनिर्णायिक रहा।

ii) चिलियाँवाला की लड़ाई : अंग्रेजों का नेतृत्व जनरल गॉफ ने किया। यह युद्ध अनिर्णायिक रहा।

iii) गुजरात की लड़ाई :- यह युद्ध "तोपों के युद्ध" के नाम से जाना जाता है। इसमें अंग्रेजी सेना का नेतृत्व सर चार्ल्स नेपियर ने किया।

- यह युद्ध पूर्णतः निर्णायिक था। इस युद्ध से पंजाब राज्य की शक्ति समाप्त हो गयी एवं पंजाब पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

मैसूर

* 18वीं सदी में मैसूर में चिक्का कृष्णराज का शासन था परन्तु यह कठपुतली मात्र राजा था। वास्तविक शक्ति इसके दो मंत्रियों नंजराज एवं देवराज के हाथ में थी।

⇒ हैदरअली :-

* 1721 में मैसूर के कोलार में जन्मा हैदरअली मैसूर की सेना में एक साधारण अधिकारी था बाद में हैदर अली को डिंडीगुल का फौजदार नियुक्त किया गया।
* हैदरअली ने डिंडीगुल में फ्रांसीसियों के सहयोग से शस्त्रागार की स्थापना की। [1755 ई॰ में]
* 1761 तक हैदरअली के पास मैसूर की समस्त शक्ति केन्द्रित हो गयी।

प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-69 ई॰) :-

Raj Holkar

- यह युद्ध अंग्रेजों एवं हैदरअली + मराठा + निजाम (संयुक्त सेना) के बीच हुआ।
- इसमें निजाम अंग्रेजों से मिल गया।
- हैदर अली ने अंग्रेजों को मंगलोर में पराजित किया।
- युद्ध समाप्ति के बाद 1769 ई॰ में मद्रास की संधि हुई।

द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84 ई॰) :-

- हैदरअली ने पुनः अंग्रेजों के विरुद्ध मराठों एवं निजाम से संधि कर ली।
- 1780 में हैदरअली ने कर्नाटक पर आक्रमण कर द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध की शुरुआत की एवं अंग्रेज जनरल बेली को परास्त किया।
- 1781 में हैदरअली एवं आयरकूट के बीच पोर्टोनोवा का युद्ध हुआ जिसमें हैदरअली की हार हुई।
- 1782 में हैदरअली ने पुनः अंग्रेजी सेना को परास्त किया परन्तु युद्ध में घायल हो जाने से 7 दिसम्बर, 1782 में हैदरअली की मृत्यु हो गयी।
- हैदरअली की मृत्यु के बाद 1784 तक हैदरअली के पुत्र टीपू ने युद्ध जारी रखा।
- 1784 ई॰ में मंगलोर की संधि से युद्ध समाप्त हुआ।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ टीपू सुल्तान (1782-1799) :-

* हैदरअली की मृत्यु के बाद 1782 में उसका पुत्र टीपू गद्दी पर बैठा।
* टीपू ने सुल्तान की उपाधि धारण की।
* टीपू ने नई मुद्रा, नई मापतोल की इकाई एवं नवीन संवत् शुरू किया।
* टीपू ने जारी सिक्कों पर हिन्दु देवी-देवताओं के चित्र अंकित करवाए एवं वर्ष व माह अंकित करवाने के लिए अरबी भाषा का प्रयोग किया।
* टीपू प्रथम भारतीय शासक था जिसने अपना प्रशासन यूरोपीय प्रशासन के आधार पर निर्मित किया।
* फ्रांसीसी सैनिकों के अनुरोध पर श्रीरंगपट्टनम् में जैकोबिन क्लब की स्थापना में सहयोग किया एवं स्वयं इसका सदस्य बना।
* टीपू ने मैसूर एवं फ्रांसीसी मित्रता का प्रतीक स्वतंत्रता वृक्ष लगाया।
* टीपू ने विदेशी राज्यों से मैत्री संबंध स्थापित करने के लिए अरब, काबुल, फ्रांस, तुर्की, कुस्तुंतुनिया, एवं मॉरीशस को अपना दूत मण्डल भेजा।
* टीपू ने 1796 ई॰ में नौसेना बोर्ड का गठन किया।
* टीपू ने मंगलोर, मोलीदाबाद, वाजिदाबाद में डॉक यार्ड का निर्माण करवाया।

तृतीय आंग्ल-मैसूर युध्द (1790-92) :- Raj Holkar

- यह युध्द अंग्रेज + निजाम + मराठों (संयुक्त सेना) एवं टीपू के मध्य लडा गया।
- अंग्रेजी सेना का नेतृत्व मजबूत था परिणामस्वरूप टीपू पराजित हुआ।
- 1792 में टीपू एवं अंग्रेजों के बीच श्री रंगपट्टनम की संधि हुई।

चतुर्थ आंग्ल मैसूर युध्द (1799) :-

- अंग्रेजो ने पुन: निजाम एवं मराठों से संधि कर ली। अंग्रेज सेना का नेतृत्व वैलेजली हैरिस और स्टुअर्ट ने किया।
- 4 मई, 1799 ई॰ को टीपू युध्द में मारा गया। एवं मैसूर की गद्दी पर आइयार वंश के बालक कृष्णराय को बिठा दिया गया।

* इस जीत (मैसूर विजय) की खुशी में आयरलैण्ड के लार्ड समाज में वैलेजली को मार्क्विस की उपाधि दी गयी।

नोट :- सर मोक्षगुण्डम विश्वेसरैया (एम॰ विश्वेसरैया) को आधुनिक मैसूर का पिता कहा जाता है।

Raj Holkar
KD Job Updates
Scanned by CamScanner

बंगाल

* 1701 ई. में औरंगजेब ने मुर्शिद कुली खां को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया।
* मुर्शिदकुली खां बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा का सूबेदार था।
* औरंगजेब की मृत्यु के बाद बंगाल मुर्शिदकुली खां के नेतृत्व में पूर्ण स्वतंत्र राज्य हो गया।
* 1704 ई. में मुर्शिदकुली खां ने बंगाल की राजधानी को ढाका से मुर्शिदाबाद हस्तांतरित किया।
* मुर्शिद को बंगाल में नयी जमींदारी पर आधारित 'कुलीन वर्ग' का जनक माना जाता है।
* मुर्शिद कुली खां ने भूमि बन्दोबस्त में इजारेदारी प्रथा प्रारंभ की।

Raj Holkar

⇒ सिराज-उद्-दौला (1756-57)

राजगद्दी के प्रतिद्वन्दी : शौकत जंग, घसीटी बेगम, मीरजाफर
- घसीटी बेगम को बंदी बनाया।
- मीरजाफर को सेनापति पद से हटाकर मीर मदान को सेनापति बनाया
- मनिहारी का युद्ध (1756) में शौकत जंग को हराया।

ब्लैकहोल घटना (20 जून, 1756) :- हालवेल के अनुसार, सिराज ने 20 जून की रात 146 अंग्रेज बंदियों को 18 फुट लंबी एवं 14 फुट 10 इंच चौड़ी कोठरी में बन्द कर दिया था। अगले दिन जब देखा तो हालवेल सहित 23 व्यक्ति ही जिन्दा बचे थे। अंग्रेज इतिहासकारों ने इस घटना को ब्लैक होल त्रासदी कहा है।

Raj Holkar

प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757) :-
- प्लासी का युद्ध अंग्रेज सेना एवं बंगाल के नवाब सिराज उद्दौला के बीच हुआ
- अंग्रेज सेना का नेतृत्व क्लाइव ने किया था। नवाब की सेना का नेतृत्व मीरजाफर, यारलतीफ खां एवं राय दुर्लभ ने किया।
- नवाब की सेना के नेतृत्वकर्ता राजद्रोही थे जो अंग्रेजों से मिले हुए थे। इन्होंने युद्ध में कोई भूमिका नहीं निभाई।
- नवाब की सेना के वफादार सिपाही मीर मदान और मोहन लाल युद्ध में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- सिराज उद्दौला की भी हत्या कर दी गयी।
- षड्यंत्र के मुताबिक युद्ध जीतने के बाद अंग्रेजों ने 28 जून, 1757 को मीर जाफर को बंगाल का नवाब बना दिया गया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ मीर जाफर (1757-60) :-

* मीर जाफर के समय से बंगाल में कंपनी King Maker की भूमिका निभाने लगी।
* बंगाल की नवाबी प्राप्त करने के उपलक्ष्य में मीर जाफर ने कंपनी को '24 परगना' की [redacted] जमींदारी प्रदान की एवं अंग्रेजों को अनेक पुरुस्कार प्रदान किए।
* 1760 में मीरजाफर ने अपने दामाद मीर कासिम के पक्ष में सिंहासन त्याग दिया।

⇒ मीरकासिम (1760-63) :-

* मीर कासिम ने राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर हस्तांतरित की।
* मीर कासिम ने राजस्व प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार रोकने का प्रयास किया।
* मीर कासिम ने सैनिकों की संख्या में वृध्दि कर यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित किया।
* मीर कासिम ने आंतरिक व्यापार पर सभी प्रकार के शुल्कों की वसूली बंद करवा दी।
* जुलाई 1763 में कंपनी ने मीर कासिम को अपदस्थ कर मीरजाफर को पुनः नवाब बना दिया।

Raj Holkar

बक्सर का युध्द (1764) :-

- यह युध्द अंग्रेजी सेना एवं मीरकासिम + शाहआलम-II + शुजाउद्दौला के बीच हुआ
  (संयुक्त सेना)
- अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो ने किया।
- 23 अक्टूबर, 1764 को युध्द प्रारंभ हुआ।
- युध्द में अंग्रेजों की जीत हुई परिणाम स्वरूप बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा पर कंपनी का पूर्ण प्रभुत्व स्थापित हो गया। अवध अंग्रेजों का कृपा पात्र बन गया।

Raj Holkar

* 5 फरवरी, 1765 में मीर जाफर की मृत्यु के बाद कंपनी ने उसके पुत्र नज्मुद्दौला को अपने संरक्षण में नवाब बनाया।

⇒ बंगाल में द्वैध शासन :-

- द्वैध शासन का जनक लियोनिल कर्टिस को माना जाता है।
- बंगाल में द्वैध शासन की शुरुआत 1765 ई. में हुई।
- द्वैध शासन के अंतर्गत कंपनी ने दीवानी एवं निजामत के कार्यों का निष्पादन भारतीयों के माध्यम से करती थी जबकि वास्तविक सत्ता कंपनी के पास थी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

मराठा साम्राज्य

⇒ **मराठा उत्कर्ष के कारक :-**

- भौगोलिक परिस्थिति
- हिन्दु जन जागरण
- औरंगजेब की हिन्दु विरोधी नीतियां
- मराठा संत एवं कवियों के धार्मिक आन्दोलन
- मुगल साम्राज्य की पतनोन्मुख स्थिति

शिवाजी

Raj Holkar

परिचय : जन्म :- 20 अप्रैल, 1627 (विवादित) कुछ जगह 19 फरवरी, 1630

जन्म स्थान : शिवनेर दुर्ग (पूना) पिता का नाम : शाहजी भोंसले

माता का नाम : जीजा बाई गुरु : समर्थ रामदास (धरकरी संप्रदाय)

संरक्षक : दादा कोणदेव राज्याभिषेक : 1674 ई॰ (रायगढ़ दुर्ग में)

उपाधि : छत्रपति, हिन्दु धर्मोध्दारक, राजा (औरंगजेब द्वारा)

प्रथम विजय : सिंहगढ़ किला (1643 ई॰)

प्रथम राज्याभिषेक : जून, 1674 (रायगढ़ दुर्ग में विश्वेश्वर (गंगाभट्ट) द्वारा

द्वितीय राज्याभिषेक : सितंबर, 1674 निश्चलपुरी गोसाईं द्वारा

⇒ **शिवाजी की विजय**

- सर्वप्रथम, 1643 ई॰ सिंहगढ़ का किला जीता।
- 1646 ई॰ तोरण पर अधिकार।
- 1656 तक, चाकन, पुरन्दर, बारामती, सूपा, तिकोना, लोहगढ़ पर अधिकार
- 1656 ई॰ में जावली एवं रायगढ़ पर अधिकार।
- 1657 में पहली बार शिवाजी का मुकाबला मुगलों से हुआ। शिवाजी बीजापुर की तरफ से मुगलों से लड़ा।
- 1659 में बीजापुर शासक ने शिवाजी को दबाने व कैद करने के लिए अफजल खां के नेतृत्व में एक टुकड़ी भेजी। शिवाजी ने अफजल खां की हत्या कर दी।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

- 1660 में औरंगजेब ने शिवाजी को समाप्त करने के लिए शाइस्ता खाँ को दक्षिण का गवर्नर नियुक्त किया परन्तु 1663 में शिवाजी ने रात में पूना के महल पर आक्रमण कर दिया और शाइस्ता खाँ भाग निकला।

- 1664 में शिवाजी ने सूरत को लूटा।

- औरंगजेब ने आमेर के राजा, मिर्जाराजा जयसिंह को शिवाजी दमन के लिए भेजा। जयसिंह के साथ युध्द में शिवाजी की हार हुई तथा शिवाजी ने संधि करली।

पुरंदर की संधि (जून, 1665): इस संधि से शिवाजी को 23 किले मुगलों को सौंपने पड़े।

Raj Holkar

- 1666 ई. में जयसिंह के आश्वासन पर शिवाजी औरंगजेब से मिलने आगरा आये परन्तु उचित सम्मान में न मिलने पर उठ कर चल दिए। इससे नाराज होकर औरंगजेब ने शिवाजी को कैद कर जयपुर भवन (आगरा) में रखा।

- शिवाजी ने औरंगजेब से समझौता कर लिया एवं अपने पुत्र शंभाजी को मुगल युवराज मुअज्जम की सेवा में भेज दिया।

- औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की उपाधि प्रदान की।

- 1670 में शिवाजी ने पुनः मुगलों से युध्द शुरू किया और पुरन्दर की संधि द्वारा खोये अनेक किलों को पुनः जीत लिया।

कर्नाटक अभियान (1677 ई.):-

* इस अभियान में शिवाजी ने जिंजी, मदुरै, बेल्लूर आदि के साथ कर्नाटक एवं तमिलनाडु के लगभग 100 किलों को जीता।
* शिवाजी ने जिंजी को अपने दक्षिण भाग की राजधानी बनाया।
* 12 अप्रैल, 1680 में शिवाजी की मृत्यु हो गयी।

⇒ विचार:-

"मैं शिवाजी को हिन्दु प्रजाति का अंतिम रचनात्मक प्रतिभा-संपन्न व्यक्ति और राष्ट्र निर्माता मानता हूं।" - जदुनाथ सरकार

"विगत एक सहस्त्राब्दि में शिवाजी जैसा कोई हिन्दु सम्राट नहीं हुआ था।"
- स्वामी विवेकानन्द।

Raj Holkar
KD Job Updates
Scanned by CamScanner

⇒ शिवाजी का प्रशासन :-

* प्रशासन में शीर्ष पर छत्रपति होता था।
* छत्रपति प्रभुत्व सम्पन्न निरंकुश शासक, अंतिम कानून निर्माता, प्रशासकीय प्रधान, न्यायाधीश और सेनापति था।

अष्टप्रधान:- शासन का संचालन 8 मंत्रियों की संस्था की सहायता से होता था। इन मंत्रियों का कार्य छत्रपति को परामर्श देना मात्र था। प्रत्येक मंत्री राजा के प्रति उत्तरदायी था।

i) पेशवा : राजा का प्रधान मंत्री। कार्य: सम्पूर्ण राज्य शासन की देखभाल।

ii) अमात्य / मजमुआदार : वित्त एवं राजस्व मंत्री (मजूमदार)

iii) वाकिया नवीस : राजा एवं दरबार के दैनिक कार्यों का विवरण रखना (गृह मंत्री)

iv) शुरु नवीस / सचिव : राजकीय पत्र व्यवहार का कार्य।

v) दबीर / सुमन्त : विदेश मंत्री

vi) सर-ए-नौबत / सेनापति : सेना का भर्ती, संगठन, रसद आपूर्तिकर्ता

vii) पण्डितराव : धार्मिक अनुदानों संबंधित कार्य।

viii) न्यायाधीश : राजा के बाद मुख्य न्यायाधीश। (दीवानी व फौजदारी दोनों)

चिटनिस : मुंशी (पत्राचार लिपिक) होता था।

पण्डितराव एवं न्यायाधीश को छोड़कर सभी युद्ध में भाग लेते थे।

Raj Holkar

सेना :-

- शिवाजी के पास स्थायी एवं नियमित सेना थी।

घुड़सवार : i) बरगीर : राज्य की ओर से घोड़े व अस्त्र दिए जाते थे।
ii) सिलेदार : स्वयं के घोड़े व अस्त्र रखते थे।

- शिवाजी की सेना में भिन्न-भिन्न जातियों के सैनिक थे।
- सैनिकों को नकद वेतन दिया जाता था।

मावली सैनिक : शिवाजी के अंगरक्षक।

पागा : घुड़सवार सेना का एक संगठन था।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ राजस्व प्रशासन :-

* शिवाजी की राजस्व व्यवस्था रैय्यतवाड़ी प्रथा पर आधारित थी।
* भूमि की पैमाइश के आधार पर उत्पादन का अनुमान लगाया जाता था तथा किसान से लगान निर्धारित किया जाता था।
* राजस्व नकद या वस्तु के रूप में चुकाया जा सकता था।
* आरंभ में शिवाजी ने उपज का 33% भाग कर के रूप में वसूल किया बाद में इसे बढ़ा कर 40% कर दिया।
* भूमि की पैमाइश काठी/जरीब से की जाती थी।
* कृषकों को तकावी ऋण भी प्रदान किया जाता था।
* गाँव के प्राचीन पैतृक अधिकारी पाटिल और जिले के देशमुख/देशपाण्डे होते थे।

चौथ :- विजित राज्यों के क्षेत्रों से उपज का 1/4 भाग कर के रूप में वसूल किया जाता था।

सरदेशमुखी : यह एक अतिरिक्त कर था जो उपज का 1/10 भाग था। 10% होता था।

Raj Holkar

⇒ न्याय व्यवस्था :-

* शिवाजी की न्याय व्यवस्था प्राचीन स्मृतियों पर आधारित थी।
* ग्राम स्तर पर अपराधिक मामलों की सुनवाई पटेल करता था।
* अपील की अंतिम अदालत हाजिर-मजलिस थी।
* अंतिम/सर्वोच्च न्यायाधीश/कानून निर्माता छत्रपति था।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

* शिवाजी की मृत्यु के बाद 21 अप्रैल, 1680 ई॰ को राजाराम का राज्याभिषेक हुआ। इसके कुछ समय बाद ही शिवाजी के दो पुत्रों (दो पत्नियों से उत्पन्न) शम्भाजी एवं राजाराम के बीच उत्तराधिकार का विवाद हुआ। अन्ततः राजाराम को गद्दी से उतारकर शम्भाजी का 20 जुलाई 1680 में ~~राज्याभिषेक~~ सिंहासनारूढ़ किया गया।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ शंभाजी (1680-89 ई.) :-

- ये शिवाजी के छोटे पुत्र थे।
- शिवाजी ने इन्हें पन्हाला किले में कैद कर दिया था।
- 16 जनवरी, 1681 ई. में इनका राज्याभिषेक हुआ। इन्होंने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। इन्होंने ब्राह्मण कविकलश को प्रशासन का सर्वोच्च पद सौंपा।
- इनके समय में अष्टप्रधान में विघटन हो गया था।
- इन्होंने औरंगजेब के पुत्र अकबर को संरक्षण दिया था। इसी कारण औरंगजेब ने इनकी हत्या करवा दी। शम्भाजी के साथ कविकलश की हत्या भी करवायी गयी

⇒ राजाराम (1689-1700) :-

Raj Holkar

- शम्भाजी की मृत्यु के बाद राजाराम पुनः राजगद्दी पर बैठा।
- राजाराम स्वयं को शाहू (शम्भाजी का पुत्र) का प्रतिनिधि कहता था।
- राजाराम के समय में ही प्रतिनिधि पद का सृजन हुआ जो पेशवा से ऊपर एवं छत्रपति से नीचे का पद था। इस प्रकार अष्टप्रधान में अब 9 मंत्री हो गये।
- 1689 ई. में ही औरंगजेब के आक्रमण के भय से राजाराम ने रायगढ़ को छोड़कर जिंजी में शरण ली एवं 8 वर्षों तक जिंजी को राजधानी बना वहीं रहा।
- औरंगजेब ने 1689 में रायगढ़ पर आक्रमण कर शाहू को बंदी बना लिया जो ~~अकब~~ औरंगजेब की मृत्यु (1707 ई.) तक कैद में रहा।
- राजाराम के समय ~~1689~~ 1689 में मुगलों ने रायगढ़ पर कब्जा कर लिया।
- 1698 ई. में में राजाराम जिंजी से वापस आया और सतारा को राजधानी बनाया। 1700 ई. में राजाराम की मृत्यु हो गयी।

Raj Holkar

⇒ शिवाजी-II (ताराबाई के संरक्षण में) :- (1700-1707 ई.)

- राजाराम की मृत्यु के बाद उनकी विधवा ताराबाई ने अपने चार वर्षीय पुत्र को शिवाजी-II नाम से गद्दी पर बैठाया एवं स्वयं उसकी संरक्षिका बन गयी।
- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद, औरंगजेब के पुत्र आजमशाह ने जुल्फिकार खां के कहने पर ~~शिवाजी के~~ शाहू जी को आजाद कर दिया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ शाहू जी :- (1707-49)

- औरंगजेब की कैद से रिहा होने के बाद सतारा पहुंचा तो सतारा पर ताराबाई का अधिकार था।

खेडा का युद्ध (12 अक्टूबर, 1707) : यह ताराबाई की सेना एवं शाहू जी की सेना के बीच हुआ। इस युद्ध में बालाजी विश्वनाथ की सहायता से शाहू जी विजयी हुआ। ताराबाई भागकर दक्षिणी महाराष्ट्र पहुंच गयी।

- 1708 में शाहू जी का राज्याभिषेक हुआ उसकी राजधानी सतारा थी।
- मराठा राज्य दो भागों में बंट गया : (वार्ना की संधि, 1731 द्वारा)
  - i) उत्तर राज्य : शाहू जी के अधीन, राजधानी : सतारा
  - ii) दक्षिण राज्य : शिवाजी-II के अधीन, राजधानी : कोल्हापुर
- 1708 ई. में शाहू ने बालाजी विश्वनाथ को सेनाकर्ते (सेना के व्यवस्थापक) का पद प्रदान किया।
- 1713 ई. में बालाजी विश्वनाथ को पेशवा के पद पर आसीन किया। इसके बाद यह पेशवा पद वंशानुगत हो गया।
- 1714 ई. में राजाराम की दूसरी पत्नि राजसबाई ने ताराबाई एवं उसके पुत्र शिवाजी-II को कैद कर लिया और अपने पुत्र शम्भाजी-II के साथ कोल्हापुर में बस गयी।

Raj Holkar

Raj Holkar

⇒ राजाराम-II (1749-50 ई.) :-

- ताराबाई के कहने पर राजाराम-II को छत्रपति बनाया गया।

संगोला की संधि, 1750 :

- बालाजी बाजीराव एवं राजाराम-II के बीच
- इस संधि के अनुसार, मराठा संघ का वास्तविक नेता पेशवा बन गया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

पेशवाओं के काल में मराठा

⇒ **बालाजी विश्वनाथ :- [1713-20 ई.]**

- यह ब्राह्मण था जो पेशवाओं के क्रम में सातवां था।
- बालाजी विश्वनाथ को मराठा साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक माना जाता है।
- 1708 ई. में इन्हें सेनाकर्ते का पद प्रदान किया गया। 1713 में पेशवा बने।

दिल्ली संधि / मुगल मराठा संधि / बालाजी - सैयद हुसैन संधि :-

कारण : फर्रुखसियर को सिंहासन से हटाना

- यह संधि पेशवा बालाजी विश्वनाथ एवं सैय्यद हुसैन अली (मुगलों की ओर से) के बीच हुई।
- रिचर्ड टेम्पल ने इस संधि को मराठों का मैग्नाकार्टा कहा था।
- इस संधि पर हस्ताक्षर करने वाला मुगल शासक रफी उद दरजात था।

⇒ **बाजीराव प्रथम (1720-40) :-** Raj Holkar

- मराठा शक्ति को चर्मोत्कर्ष पर पहुंचाया।
- मुगल साम्राज्य की तात्कालिक स्थिति पर बाजीराव ने कहा " हमें इस जर्जर वृक्ष के तने पर प्रहार करना चाहिए, शाखाएं तो स्वयं ही गिर जाएंगी "।
- शूकरखेडा के युध्द में मराठों ने दक्कन के निजामुलमुल्क का सहयोग किया एवं निजाम ने मुगल सूबेदार मुबारिज खां को परास्त किया।

पालखेडा का युध्द (7 मार्च, 1728) में बाजीराव ने निजाम को परास्त किया। इस युध्द में हारने के बाद निजाम ने मुंशी शिवगाँव की संधि की। इस संधि के बाद दक्कन में मराठा सर्वोच्चता स्थापित हो गयी।

डभोई का युध्द (1731 ई.) में बाजीराव ने त्रयम्बक राव को परास्त किया। 1738 में गुजरात को मराठा राज्य में मिला लिया गया।

अमझेरा का युध्द (1728) बाजीराव ने मालवा के सूबेदार गिरधर बहादुर को पराजित किया।

मुगल सूबेदार सवाई जयसिंह, मुहम्मद खां बंगश, गिरधर बहादुर इत्यादि मराठा पेशवा बाजीराव एवं मराठा सरदार ऊदाजी पवार एवं मल्हार राव होल्कर को रोकने में असफल रहे।

- 1735 ई. तक मालवा में मुगलों की सत्ता लगभग समाप्त हो गयी।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

बुन्देलखण्ड विजय : 1728 ई. में मराठों ने मुगलों से बुन्देलखण्ड के सभी विजित प्रदेश वापस छीन लिए।

छत्रसाल ने पेशवा की शान में आयोजित दरबार में एक मुस्लिम नर्तकी 'मस्तानी' को पेश किया एवं काल्पी, झांसी, सागर एवं हृदयनगर पेशवा को जागीर में भेंट किया।

• **दिल्ली पर आक्रमण** (29 मार्च, 1737) 3 दिन दिल्ली में रहने के बाद पेशवा को मालवा की सूबेदारी मिल गयी एवं 13 लाख वार्षिक धनराशि की अदायगी के आश्वासन पर पेशवा वापस लौटा।

भोपाल का युद्ध (7 जुलाई, 1738 ई.) में बाजीराव ने निजाम को घेर लिया एवं संधि करने पर विवश किया। 1738 में दुरई सराय की संधि द्वारा सम्पूर्ण मालवा एवं नर्मदा से चम्बल तक का क्षेत्र मराठों को प्राप्त हुआ।

बसीन विजय (1739) : मराठों ने पुर्तगालियों से बसीन छीन लिया।

नोट :- 1732 ई. में बाजीराव ने एक इकरारनामा तैयार किया जिससे सम्पूर्ण मराठा राज से 4 नए मराठा राज्यों की आधारशिला तैयार हुई।

i) ग्वालियर : सिंधिया राजवंश (रानोजी सिंधिया द्वारा)
ii) इन्दौर : होल्कर राजवंश (मल्हार राव होल्कर द्वारा)
iii) बडोदा : गायकवाड राजवंश (पिलाजी गायकवाड)
iv) नागपुर : भोंसले राजवंश (शाहू के साथ संबंध)

Raj Holkar

⇒ **बालाजी बाजीराव (1740-61 ई.)** :- अन्य नाम :- नाना साहब

- इसने मराठा शासक राजाराम-II से संगोला समझौता करके राज्य के सम्पूर्ण अधिकार स्वयं ले लिए।
- 1742 ई. में झांसी मराठों का उपनिवेश बना।
- 1751 ई. में उडीसा पर मराठों का अधिकार हो गया। बंगाल एवं बिहार से चौथ प्राप्त।
- 1752 ई. में निजाम एवं मराठों के बीच भलकी की संधि हुई एवं बराड का आधा क्षेत्र मराठों को प्राप्त हुआ।

Raj Holkar

सिन्दखेडा युद्ध (1757) में मराठों ने निजाम से कई प्रदेश छीने।

उदगीर का युद्ध (1760) में मराठों ने निजाम को हराकर अहमदनगर, दौलताबाद, बुरहानपुर एवं बीजापुर प्राप्त किए।

- बालाजी बाजीराव के समय ही पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ।

पानीपत का तीसरा युद्ध (14 जनवरी, 1761) :- यह युद्ध अहमदशाह अब्दाली एवं मराठों के बीच हुआ जिसमें मराठों की बुरी हार हुई। मराठा शक्ति का बहुत ह्रास हुआ।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ माधवराव प्रथम (1761-72) :-

- पानीपत के तीसरे युद्ध में हार के बाद मराठों की प्रतिष्ठा को पुनः बहाल करने की कोशिश की।
- हैदराबाद के निजाम एवं मैसूर के हैदरअली को चौथ देने के लिए बाध्य किया।
- इसी के काल में मुगल बादशाह शाह आलम-II ने 1772 ई. में मराठों की संरक्षिता स्वीकार की।
- इसकी मृत्यु के बाद मराठा साम्राज्य का पतन प्रारंभ हो गया।

⇒ नारायण राव (1772-73) :-

- यह माधवराव का छोटा भाई था। इसकी हत्या रघुनाथराव ने की।

⇒ माधव नारायण राव (1774-95 ई.) :-

Raj Holkar

- यह नारायण राव का पुत्र था।
- नाना फडनवीस के नेतृत्व में मराठा राज्य की देखभाल के लिए "बारा भाई कौंसिल" की नियुक्ति की।

⇒ बाजीराव द्वितीय (1795-1818 ई.) :-

- फडनवीस की मृत्यु के बाद मराठा शक्ति पेशवा बाजीराव-II, दौलतराव सिंधिया एवं यशवन्त राव होल्कर के हाथ में रही।

Raj Holkar

पूना में पेशवा एवं होल्कर के बीच संघर्ष :- पेशवा बाजीराव-II एवं दौलतराव सिंधिया ने होल्कर के खिलाफ षड्यंत्र रचा एवं 1801 में पेशवा ने जसवंत राव होल्कर के भाई विट्ठूजी की निर्मम हत्या कर दी।

जसवंतराव होल्कर ने 1802 में पूना पर आक्रमण किया एवं पेशवा और सिंधिया की संयुक्त सेना को हृदयसर नामक स्थल पर पराजित कर पूना पर अधिकार कर लिया। बाजीराव-II बसीन भाग गया वहाँ उसने 31 दिसम्बर, 1802 में अंग्रेजों के साथ बसीन की संधि कर ली।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

मराठा रियासतें (40)

* मराठा क्षेत्र मुख्य रूप से 6 रियासतों में बंटा था -
  - i) सतारा - छत्रपति
  - ii) पुणे - पेशवा
  - iii) ग्वालियर - सिंधिया
  - iv) नागपुर - भोंसले
  - v) बड़ोदा - गायकवाड़
  - vi) इन्दौर - होल्कर

सिंधिया राजवंश

* मालवा में सिंधिया वंश की स्थापना रानोजी सिंधिया ने की।
* प्रारंभ में इनकी राजधानी उज्जैन थी बाद में ग्वालियर को राजधानी बनाया गया।
* महादजी सिंधिया इस वंश का एक प्रतापी शासक हुआ।
* 1803 ई० में दौलत राव सिंधिया अपने क्षेत्र को अंग्रेजों के समर्पण के लिए बाध्य हो गया।

भोंसले राजवंश

* नागपुर में भोंसले वंश की स्थापना रघुजी भोंसले ने की।
* रघुजी भोंसले को बंगाल एवं बिहार में साम्राज्य विस्तार का उत्तरदायी माना जाता है।

गायकवाड राजवंश

* गुजरात में गायकवाड वंश की स्थापना पिला जी राव गायकवाड ने की।
* गायकवाड गुजरात में मराठा सेनापति दबाधे परिवार के अधीनस्थ थे।
* दामाजी राव गायकवाड मराठा सेना के साथ पानीपत के तृतीय युद्ध में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ा था।

Raj Holkar

होल्कर राजवंश

* इन्दौर में होल्कर राजवंश की स्थापना मल्हार राव होल्कर ने की थी।

⇒ अहिल्या बाई होल्कर : ये होल्कर वंश का गौरव एवं कुशल शासिका मानी जाती हैं।
- ये मल्हार राव होल्कर के पुत्र खांडेराव होल्कर की पत्नी थीं।
- मालवा के इन्दौर क्षेत्र में शांति, लुटेरों से मुक्ति एवं अनेक सामाजिक एवं धार्मिक तथा मन्दिर, धर्मशाला, सड़क, घाट, कुएं, बावड़ियों के निर्माण के लिए स्मरणीय हैं।
- अहिल्या बाई होल्कर महिला सशक्तिकरण की पक्षधर थीं।
- अहिल्या बाई होल्कर ने कलकत्ता से बनारस तक सड़क, बनारस का अन्नपूर्णा मन्दिर गया में विष्णु मन्दिर बनवाए।
- बनारस के काशी विश्वनाथ मंदिर की वर्तमान आकृति का निर्माण अहिल्या बाई होल्कर ने करवाया। रणजीत सिंह ने मंदिर के लिए सोना दान किया एवं दो स्वर्ण गुंबद बने।

Raj Holkar
KD Job Updates
Scanned by CamScanner

आंग्ल-मराठा युध्द

सूरत की संधि (1775): बम्बई की अंग्रेजी सरकार एवं रघुनाथ राव के बीच।
- इस संधि में तय हुआ कि अंग्रेज रघुनाथ राव (राघोवा) को पेशवा बनाने में सहायता करेंगे।
- मराठे बंगाल एवं कर्नाटक पर आक्रमण नहीं करेंगे।

⇒ प्रथम आंग्ल-मराठा युध्द (1775-82):

18 मई, 1775 ई. आरस के मैदान में अंग्रेज एवं मराठों के बीच पहला संघर्ष हुआ इस संघर्ष में मराठों की हार हुई।

i) **पुरन्दर की संधि (1 मार्च, 1776 ई.):** वारेन हेस्टिंग्स ने पूना दरबार में कर्नल अप्टन को भेजकर यह संधि की। यह संधि कार्यान्वित नहीं हुई।

ii) **बडगाँव की संधि (1779 ई.):** पुणे दरबार एवं अंग्रेजों के बीच यह संधि हुई। वारेन हेस्टिंग्स ने इस संधि को मानने से इन्कार कर दिया।

iii) **सालबाई की संधि (1782 ई.):** महादजी सिंधिया की मध्यस्थता से पुना दरबार एवं अंग्रेजों के बीच यह संधि 17 मई, 1782 ई. में हुई। इससे आंग्ल-मराठा संघर्ष रुका। इस संधि से अंग्रेजों ने रघुनाथ राव का साथ छोड माधव नारायण राव को पेशवा माना।

Raj Holkar
Raj Holkar

⇒ द्वितीय आंग्ल-मराठा युध्द (1803-05 ई.):-

यह युध्द दो मुख्य केन्द्रों में शुरु हुआ i) दक्कन - वेलेजली के अधीन अंग्रेज सेना एवं सिंधिया व भोसले की संयुक्त सेना के बीच। इसमें वेलेजली विजयी रहा।

ii) जनरल लेक के अधीन अंग्रेज सेना एवं सिंधिया की सेना के बीच उत्तर भारत में। इसमें भी अंग्रेजी सेना ने विजय प्राप्त की।

i) **देवगाँव की संधि (17 दिसम्बर, 1803 ई.):** यह भोसले एवं अंग्रेजों के बीच हुई।

ii) **सुर्जी-अर्जनगाँव की संधि (30 दिसम्बर, 1803):** यह सिंधिया एवं अंग्रेजों की बीच थी।

⇒ तृतीय आंग्ल-मराठा युध्द (1817-18 ई.):-

यह युध्द पेशवा एवं अंग्रेजों के मध्य हुआ जिसमें पेशवा पराजित हुआ।

पूना की संधि (13 जून, 1817): यह पेशवा बाजीराव-II एवं अंग्रेजों के बीच हुई। इस संधि से पेशवा को मराठा संघ की प्रधानता त्यागनी पडी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* दौलतराव सिंधिया एवं अंग्रेजों के बीच 5 नवंबर, 1817 ई॰ को ग्वालियर की संधि हुई।
* नागपुर के भोसले एवं अंग्रेजों के बीच 27 मई, 1816 ई॰ में सहायक संधि हुई।
* होल्कर एवं अंग्रेजों के बीच 6 जनवरी, 1818 ई॰ में मंदसौर की संधि हुई।
* पेशवा एवं अंग्रेजों के बीच और दो बार संघर्ष हुआ-
    i) कोरेगाँव (1 जनवरी, 1818) : पेशवा की हार हुई।
    ii) अण्टी में (20 फरवरी, 1818) : यहाँ भी पेशवा पराजित हुआ।
* पेशवा बाजीराव द्वितीय ने 3 जून, 1818 में सर जॉन मेल्कम के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। बाजीराव-II को 8 लाख ₹ वार्षिक पेंशन पर कानपुर के समीप बिठूर में रहने की आज्ञा दी गयी।
* मराठा साम्राज्य का अंतिम छत्रपति शाहजी अप्पा साहेब थे।

Raj Holkar

⇒ मराठों के पतन के कारण :-

- उत्तरकालीन मराठों का अकुशल नेतृत्व
- मराठा सैन्य प्रणाली में आधुनिकता का अभाव
- मराठों की अपर्याप्त नौसेना
- गुप्तचर प्रणाली का अभाव
- मराठा सरदारों की आपसी कलह।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के चरण (43)

रजनी पाम दत्त (आर. पी. दत्त) ने भारत में साम्राज्यवादी काल को तीन भागों में बांटा है -

1. वाणिज्यिक (Commercial) चरण : 1757 से 1813 ई. तक
2. स्वतंत्र व्यापारिक पूंजीवाद चरण : 1813 से 1857 ई. तक
3. वित्तीय पूंजीवाद का चरण : 1858 से 1947 ई. तक

1. वाणिज्यिक चरण / वणिकवाद :-

- इस काल में ब्रिटिश कंपनी का मूल उद्देश्य अधिकाधिक धन प्राप्त करना था। कुछ अन्य उद्देश्य राजनैतिक शक्ति में वृद्धि एवं व्यापार पर एकाधिकार था।
- उद्देश्य प्राप्ति के लिए कंपनी द्वारा अपने जाने वाले तरीके -
  - a. व्यापार पर एकाधिकार एवं प्रतिद्वन्द्वी समाप्त करना।
  - b. वस्तुएं कम मूल्य पर खरीदी एवं अधिकाधिक मूल्य पर बेची जाएं।
  - c. देश पर राजनैतिक नियंत्रण स्थापित करना।

के. एम. पन्निकर ने 1765 से 1772 ई. के काल को डाकू राज्य कहा है।

नोट: गृह व्यय (Home charges) : गृह व्यय वह व्यय था जो भारत राज्य सचिव तथा उससे सम्बद्ध व्यय था। गृह व्यय में शामिल तत्व Imp

- a. ईस्ट इण्डिया कंपनी के भागीदारों का लाभांश
- b. विदेश में लिए गए सार्वजनिक ऋण
- c. सैनिक तथा असैनिक व्यय
- d. इंग्लैण्ड में भण्डार वस्तुओं की खरीद।

Raj Holkar

2. औद्योगिक पूंजीवाद / स्वतंत्र व्यापार चरण :-

- 1813 ई. में भारत के व्यापार पर से कंपनी का एकाधिकार समाप्त हो गया (चीन के साथ व्यापार एवं चाय के व्यापार पर एकाधिकार बना रहा। यह 1833 में समाप्त हुआ)
- इस काल में कंपनी का मुख्य लक्ष्य भारत को ब्रिटेन के एक अधीनस्थ बाजार के रूप में विकसित करना था।

Raj Holkar
KD Job Updates
Scanned by CamScanner

- भारत को ऐसे उपनिवेश के रूप में परिवर्तित करना जहाँ से ब्रिटेन को कच्चा माल प्राप्त होता रहे।
- उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कंपनी ने भारत में कृषि के वाणिज्यीकरण को बढ़ावा, शिल्प उद्योगों का विनाश, भू- राजस्व प्रणालियां लागू करना इत्यादि तरीके अपनाए।

3. वित्तीय पूंजीवाद का चरण :-

इस काल में ब्रिटिश सरकार का मुख्य लक्ष्य ब्रिटिश व्यापारियों द्वारा जमा पूंजी के लिए भारत को निवेश स्थल के रूप में तैयार करना।

भू- राजस्व व्यवस्था

- 1772 ई॰ में केन्द्रीय खजाना मुर्शिदाबाद से कलकत्ता लाया गया।
- 1772 ई॰ में पंचसाला बन्दोबस्त शुरु हुआ।
- 1777 ई॰ में सालाना बन्दोबस्त शुरु हुआ।
- 1786 ई॰ में रिवेन्यु बोर्ड की स्थापना की गयी।

Raj Holkar

1. स्थायी बन्दोबस्त

अन्य नाम : इस्तमरारी, मालगुजारी, बिसवेदारी, जागीरदारी

प्रणेता : जॉन शोर

लागू : 1793 ई॰ में लार्ड कार्नवालिस ने। सर्वप्रथम - बंगाल में लागू

शामिल क्षेत्र : ब्रिटिश भारत के कुल क्षेत्रफल का 19% भू-भाग।

विस्तार : बंगाल, बिहार, उडीसा, बनारस, उत्तरी कर्नाटक

Raj Holkar

प्रावधान :-

* भू राजस्व सदैव के लिए निर्धारित किया।
* जमींदारों को भूमि का स्वामी मान लिया गया।
* भू- स्वामित्व परंपरागत हो गया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* लगान को 10/11 भाग सरकार का एवं 1/11 भाग जमींदारों का निश्चित हुआ।

सूर्यास्त कानून (1795ई०) इस कानून के अनुसार, जमींदारों को लगान की राशि जमा करने के लिए एक दिन निश्चित किया जाता था एवं उस दिन सूर्यास्त से पहले लगान जमा करवाना होता था अन्यथा उनकी जागीर नीलाम कर दी जाती थी।

2. रैय्यतवाडी पध्दति

Raj Holkar

जन्मदाता: थॉमस मुनरो तथा कैप्टन रीड

लागू: 1792 में यह व्यवस्था सर्वप्रथम बारामहल जिले में (तमिलनाडु) में कैप्टन रीड ने लागू की। 1820 में मद्रास, 1825 में बम्बई में लागू की गयी।

विस्तार: बारामहल, मद्रास, बम्बई, पूर्वी बंगाल, असम एवं कुर्ग। ब्रिटिश भारत के 51% भूभाग पर लागू।

- ब्रिटिश भारत के सर्वाधिक भू-भाग पर लागू की गयी व्यवस्था।

विशेषताएं:

* प्रत्येक पंजीकृत भूमिदार को भूमि का स्वामी माना गया।
* रैय्यत/किसान/भूमिदार को अपनी भूमि को बेचने तथा गिरवी रखने का अधिकार दिया गया।
* भूमि कर का निर्धारण भूमि के सर्वेक्षण करने के बाद किया जाता था।
* सरकार द्वारा रैय्यतों को पट्टे प्रदान किया जाता था।
* लगान की अदायगी न होने पर भूमि जब्त कर ली जाती थी।
* भूमि कर की समीक्षा 30 वर्ष की जाती थी।
* इस पध्दति में भू-राजस्व लगभग -50% था।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

3. महालवाडी व्यवस्था

महाल : महाल/महल, गाँव या जागीरों को कहा जाता था।

जन्मदाता : हाल्ट मैकेन्जी ने 1819 ई. में विकसित की।

* इस व्यवस्था में भूमिकर का बन्दोबस्त पूरे महाल/गाँव/जागीर के प्रधान या जागीरदारों के साथ किया गया।
* यह व्यवस्था ब्रिटिश भारत के लगभग 30% भू-भाग पर की गयी।
* इस व्यवस्था में भूमि पूरे गाँव की मानी जाती थी परन्तु भूमि का स्वामित्व किसान के पास होता था [जब तक लगान समय पर चुकाता था]
* कृषक अपनी भूमि बेच सकता था। लगान निश्चित समय पर न चुकाने की स्थिति में महल प्रमुख द्वारा उसे भूमि से बेदखल भी किया जा सकता था।
* इस राजस्व व्यवस्था में लगान निर्धारित करने के लिए मानचित्रों का प्रयोग किया गया।
* इस व्यवस्था के अंतर्गत उ॰प्र॰, म॰प्र॰ और पंजाब प्राँत शामिल थे।
* इस व्यवस्था द्वारा कृषक एवं अंग्रेजों के मध्य सीधा सम्पर्क समाप्त हो गया।

पंजाब की ग्राम प्रथा : पंजाब में संशोधित महालवाडी प्रथा लागू की गयी जो ग्राम प्रथा के नाम से जानी गयी।

Raj Holkar

धन का निष्कासन

भारत के धन का अविरल प्रवाह इंग्लैण्ड की ओर था परन्तु भारत को कोई लाभ नही था। यह अप्रतिफलित निर्गमन था।

निष्कासन के तत्व :-

1. गृह व्यय (Home charges)
   a. ईस्ट इण्डिया कंपनी के भागीदारों का लाभांश
   b. विदेश में लिए गए सार्वजनिक ऋण
   c. सैन्य व असैन्य व्यय
   d. इग्लैण्ड में भण्डार वस्तुओं की खरीद
2. विदेशी पूंजी पर दिया जाने वाला ब्याज
3. विदेशी बैंक, इंश्योरेंस, नौवहन कंपनियाँ।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ धन निकास से संबंधित अन्य तथ्य :-

* धन के निष्कासन की प्रक्रिया प्लासी के युद्ध के पश्चात् शुरू हुई।
* धन निष्कासन सिद्धांत का वर्णन सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक " पावर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया " में किया
* दादा भाई नौरोजी ने 1867 ई० में लंदन में हुई ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन की बैठक में अपने लेख "इंग्लैण्ड डेट टू इण्डिया' में यह विचार प्रस्तुत किया कि " ब्रिटेन भारत में अपने शासन की कीमत के रूप में भारत की सम्पदा का दोहन " कर रहा है।
* दादा भाई नौरोजी ने धन के बहिर्गमन को "अनिष्टों का अनिष्ट" कहा।
* रमेश चन्द्र दत्त (R.C. Dutt) ने भी अपनी पुस्तक "इकॉनिमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया" में धन के बहिर्गमन का उल्लेख किया।
* "कार्ल मार्क्स" ने भारत में ब्रिटिश आर्थिक नीति की चर्चा करते हुए ब्रिटिश आर्थिक नीति को घिनौनी कहा था।
* कार्ल मार्क्स ने इसे "Bleeding Process" कहा। Raj Holkar
* दादा भाई नौरोजी ने धन के निष्कासन को देश के सभी रोगों, दुखों और दरिद्रता का वास्तविक एवं मूल कारण घोषित किया।
* 1896 ई० में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में नौरोजी के सिद्धांत को स्वीकार कर लिया गया।
* धन निकासी का विरोध करने वाले समाचार पत्रों में "अमृत बाजार पत्रिका" प्रमुख थी।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

1857 का विद्रोह

स्वरूप :

⇒ सैनिक विद्रोह के पक्षधर : लॉरेंस, सीले, ट्रेवेलियन, मालसन, होम्स आदि अंग्रेज इतिहासकार एवं दुर्गादास बन्दोपाध्याय और सैय्यद अहमद खाँ।

⇒ एल॰ ई॰ आर॰ रीज के अनुसार, धर्मान्धों का ईसाइयों के विरुद्ध युद्ध।

⇒ टी॰ आर॰ होम्स के अनुसार, बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध।

⇒ जेम्स आउट्रम और डब्ल्यू टेलर के अनुसार, हिन्दु-मुस्लिम षडयंत्र।

⇒ बेंजामिन डिजरायली (ब्रिटेन के रूढ़िवादी दल के नेता) ने 1857 ई॰ में इसे राष्ट्रीय विद्रोह बताया।

⇒ अशोक मेहता के अनुसार, यह राष्ट्रीय विद्रोह था।

⇒ वी॰ डी॰ सावरकर ने इसे "सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम" की संज्ञा दी।

⇒ एस॰ एन॰ सेन के अनुसार, "इसे राष्ट्रीय संग्राम नहीं कहा जा सकता, परन्तु इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा देना भी गलत होगा, क्योंकि यह कहीं भी केवल सैनिकों तक सीमित नहीं रहा।"

⇒ आर॰ सी॰ मजूमदार के अनुसार, "यह तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम, न तो यह प्रथम, न ही राष्ट्रीय तथा न ही स्वतंत्रता संग्राम था।"

⇒ शशिभूषण चौधरी के अनुसार, "यह स्वतंत्रता का संग्राम" था।

Raj Holkar

Raj Holkar

कारण :-

⇒ राजनैतिक कारण :

* डलहौजी की व्यपगत नीति, वेलेजली की सहायक संधि,
* बहादुरशाह जफर के साथ अपमानजनक व्यवहार
* अवध का विलय।

⇒ प्रशासनिक कारण :-

* अंग्रेजी का प्रसार एवं देशीय भाषाओं की उपेक्षा।
* ब्रिटिश शासन के अप्रिय कानून

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ सामाजिक व धार्मिक कारण :

* सती प्रथा पर प्रतिबंध एवं विधवा विवाह को प्रोत्साहन
* ईसाई ~~मिशन~~ मिशनरियों को संरक्षण एवं हिन्दु व मुस्लिम मान्यताओं का उपहास
* भारतीयों को हेय दृष्टि से देखना एवं अंग्रेजों का बर्बरता पूर्ण व्यवहार।

⇒ आर्थिक कारण :

* अंग्रेजों की आर्थिक शोषण की नीतियाँ
* भारतीय उद्योगों का नाश, गरीबी एवं भुखमरी की स्थितियां
* अंग्रेजों द्वारा किया जाने वाला भ्रष्टाचार एवं जबरदस्ती लूट।

⇒ सैन्य कारण :-

Raj Holkar

* अंग्रेज सैनिकों की अपेक्षा भारतीय सैनिकों को कम वेतन दिया जाना
* सिपाहियों को जाति एवं धार्मिक चिन्ह के प्रयोगों पर रोक।
* सैनिकों के साथ किया जाने वाले भेदभाव (पदोन्नति एवं नियुक्ति दोनों में)

⇒ तात्कालिक कारण :-

* पुरानी ब्राउन बैस बंदूक के स्थान पर एनफील्ड रायफल का प्रयोग एवं इसके कारतूसों में सुअर एवं गाय की चर्बी मिली होने की सूचना।

विद्रोह का प्रारंभ

* 29 मार्च, 1857 को 34 वीं रेजीमेण्ट बैरकपुर में मंगल पाण्डे ने अपने साथियों को विद्रोह का आह्वान किया और लेफ्टिनेंट बाग की हत्या कर दी और मेजर ह्यूरसन को गोली मार दी। 8 अप्रैल को ~~म~~ मंगल पाण्डे को फांसी दी गयी।
* 10 मई, 1857 को मेरठ की सेना ने विद्रोह किया।
* मेरठ से सैनिक 11 मई दिल्ली पहुँचे एवं 12 मई, 1857 को दिल्ली पर अधिकार कर लिया एवं **बहादुर शाह जफर** को भारत का सम्राट घोषित किया
* सैन्य एवं असैन्य मामलों के लिए एक परिषद बनायी एवं बख्त खां को नेता चुना।
* 20 सितंबर, 1857 को अंग्रेजों ने दिल्ली को पुन: जीत लिया निकोलसन मारा गया।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

* हडसन ने सम्राट के दो पुत्रों मिर्जा मुगल एवं मिर्जा ख्वाजा सुल्तान को गोली मार दी।

* हडसन ने बहादुरशाह को गिरफ्तार कर लिया एवं निर्वासित कर रंगून भेज दिया 1862 ई. में बहादुरशाह की मृत्यु हो गयी। इनकी गिरफ्तारी में इलाही बख्श ने भूमिका निभायी।

विद्रोह का प्रसार

Raj Holkar

⇒ **लखनऊ :**

* 30 मई, 1857 को सैनिकों ने विद्रोह शुरु किया।
* 4 जून, 1857 बेगम हजरत महल ने विद्रोह का नेतृत्व किया
* बेगम ने बिरजिस कादिर को नवाब घोषित किया।
* चीफ कमिश्नर लौरेंस मारा गया.
* 1 मार्च, 1858 को कैम्पबेल ने विद्रोह को समाप्त किया।
* बेगम हजरत महल ने आत्मसमर्पण नहीं किया वे नेपाल चली गयीं।

⇒ **कानपुर :-**

* कानपुर के विद्रोह का नेतृत्व नाना साहब (धोंधू पंत) ने किया। नाना साहब को पेशवा घोषित किया गया।
* व्हीलर ने आत्मसमर्पण किया परन्तु सत्ती चौरा नामक स्थान पर इनके साथ कुछ अंग्रेजों को विद्रोहियों ने मार डाला।
* नाना साहब के कमाण्डर इन चीफ तांत्या टोपे (आत्माराम पाण्डुरंग) थे। इन्हें मानसिंह ने धोखे से पकड़वा दिया। ग्वालियर में तांत्या टोपे को फाँसी दी गयी।
* कैम्पबेल ने कानपुर पर पुनः कब्जा कर लिया एवं नाना साहब नेपाल चले गए

⇒ **झांसी :-** 5 जून, 1857 को विद्रोह शुरु हुआ। नेतृत्व लक्ष्मीबाई ने किया।

* 23 मार्च 1858 में ह्यूरोज ने झांसी को घेर लिया।
* झाँसी में युद्ध के पश्चात लक्ष्मीबाई काल्पी पहुँची यहाँ ह्यूरोज से पराजित होने के बाद ग्वालियर पहुँची एवं स्मिथ की सेना को भगाया।
* ग्वालियर में स्मिथ एवं ह्यूरोज की सम्मिलित सेना से युद्ध करते हुए रानी ने वीरगति प्राप्त की।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

बिहार :- बाबू कुंवर सिंह ने नेतृत्व किया। ये जगदीशपुर (शाहाबाद) के थे।
- कुंवरसिंह ने अंग्रेजों को कई बार पराजित किया एवं प्राकृतिक मौत हुई।
- विलियम टेलर एवं वेंसेंट आयर ने यहाँ विद्रोह समाप्त किया।

इलाहबाद : विद्रोह का नेतृत्व मौलवी लियाकत अली ने किया
जनरल नील ने विद्रोह को समाप्त किया।

फैजाबाद : नेतृत्व : मौलवी अहमद उल्ला   दमन : कैम्पवेल

बरेली : नेतृत्व : खान बहादुर खान   दमन : कैम्पवेल

मन्दसौर : नेतृत्व : फिरोजशाह

असम : नेतृत्व : कन्दर्पेश्वर सिंह एवं मनीराम दत्ता

उड़ीसा : नेतृत्व : सुरेन्द्रशाही एवं उज्जवल शाही

कुल्लू : नेतृत्व : राजा प्रताप सिंह एवं वीर सिंह

Raj Holkar

गोरखपुर : नेतृत्व : गजाधर सिंह

मथुरा : नेतृत्व : देवी सिंह

मेरठ : नेतृत्व : कदम सिंह

असफलता के कारण

* विद्रोह का सीमित स्वरूप
* योग्य नेतृत्व का अभाव
* संगठन एवं सशक्त केन्द्र का अभाव
* सीमित संसाधन
* जनसमर्थन का अभाव (शिक्षित एवं कृषक वर्ग ने उपेक्षा की)
* निश्चित समय से पहले विद्रोह की शुरुआत
* देशी राजाओं का देशद्रोही रुख

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ **परिणाम :** विद्रोह को समाप्त कर दिया गया परन्तु विद्रोह के कारण अंग्रेज हुकूमत में उथल पुथल मच गयी एवं भयभीत हो गयी। इसी क्रम में महारानी ने एक घोषणा पत्र जारी किया।

विक्टोरिया घोषणा पत्र :

* भारतीय प्रशासन ईस्ट इण्डिया कंपनी से निकलकर ब्रिटिश क्राउन के हाथ आ गया।
* गवर्नर जनरल को वायसराय कहा जाने लगा। प्रथम वायसराय : लार्ड कैनिंग
* ब्रिटिश सरकार अब भारत में प्रत्येक मामले के लिए उत्तरदायी हो गयी।
* इंग्लैण्ड में एक भारतीय राज्य सचिव का प्रावधान हुआ।
* स्थानीय राजाओं के अधिकार एवं सम्मान को संरक्षण दिया गया।
* डलहौजी की व्यपगत नीति के सिद्धांत को समाप्त कर दिया गया।
* भारतीय सैनिकों एवं अंग्रेज सैनिकों की संख्या का अनुपात 5:1 से घटाकर 2:1 कर दिया गया।

Raj Holkar

Raj Holkar

⇒ **अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :-**

* 1857 की क्रांति के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री - विस्कॉन्ट पामर्स्टन
* 1857 के समय भारत का गवर्नर जनरल - लार्ड कैनिंग
* 1857 के विद्रोह का प्रत्यक्षदर्शी उर्दू शायर - मिर्जा गालिब
* नाना साहब के सलाहकार थे - अजीमुल्ला खाँ
* 1857 के विद्रोह का प्रतीक - कमल और रोटी
* विद्रोह के लिए कौनसा दिन निश्चित था - 31 मई, 1857
* विद्रोह में भाग नहीं लिया - साहूकार, जमींदार, शिक्षित वर्ग, किसान (बहुत कम)
* 1857 के बाद फौज को नव संगठित करने के लिए आयोग बना - पील आयोग

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन

कारण :-

- भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना से जन्मी बौद्धिक विकास एवं पाश्चात्यीकरण की प्रक्रिया।
- मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्म का प्रसार एवं भारतीयों को ईसाई बनाना
- हिन्दु धर्म एवं समाज की निष्क्रिय एवं शक्तिहीन अवस्था।
- भारतीय समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, कुरीतियां एवं असमानता।
- देसी एवं विदेशी विद्वानों की चिन्तनशील गतिविधियां
- पाश्चात्य शिक्षा, मानवतावाद एवं सार्वभौमवाद का विकास

विशेषताएं :

- ~~[illegible]~~ विश्ववादी नजरिया एवं धार्मिक सार्वभौमवाद
- सामाजिक स्थिति पर व्यापक नजर
- तर्क एवं बौद्धिक विचारों को आधार बनाया
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अतीत की व्याख्या
- राष्ट्रीय एकता एवं समरसता

Raj Holkar

ब्रह्म समाज

स्थापना :- राजा राममोहन राय ने 20 अगस्त, 1828 में ब्रह्म सभा नाम से एक संस्था की स्थापना की। यही बाद में ब्रह्म समाज के नाम से जानी गयी

उद्देश्य : हिन्दु धर्म में सुधार, पुरोहितवाद की समाप्ति, सामाजिक समानता में वृद्धि, धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर करना, भारत का धार्मिक एवं सामाजिक रूप से उत्थान

अवधारणा : एकेश्वरवाद, आस्तिकता एवं आचार आदि विचारों पर आधारित

क्रियाकलाप :- मूर्तिपूजा का विरोध, एकेश्वरवाद की स्थापना, धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या के लिए पुरोहितवाद को नकारना, अवतारवाद का खण्डन, जाति व्यवस्था पर प्रहार, बाल विवाह का विरोध, सतीप्रथा का विरोध, स्त्रीपुरुष की आधुनिक शिक्षा का प्रयास, राष्ट्रीयता का प्रसार।

Raj Holkar
KD Job Updates
Scanned by CamScanner

⇒ ब्रह्म समाज का विकास :-

- स्थापना : 1828 में राजा राम मोहन राय द्वारा।
- 1830 में राजा राम मोहन राय के इंग्लैण्ड जाने बाद समाज का नेतृत्व आचार्य रामचन्द्र विद्या वागीश ने किया।
- 1833 में समाज का संचालन द्वारिका नाथ टैगोर के हाथ में आया।
- 1843 में नियंत्रण देवेन्द्र नाथ टैगोर के हाथ में आया।
- 1856 में समाज का नियंत्रण केशव चन्द्र सेन के हाथ में आया। केशव चन्द्र सेन के नेतृत्व में ब्रह्म समाज का विस्तार बंगाल से बाहर हुआ एवं उत्तर प्रदेश, पंजाब व मद्रास में शाखाएं खोली गयी।

Raj Holkar

⇒ ब्रह्म समाज में फूट :-

कारण : केशव चन्द्र सेन के अतिउदारवादी विचारों के कारण ब्रह्म समाज का विभाजन हुआ। केशव चन्द्र सेन के नियंत्रण में ब्रह्म समाज के अन्दर ऐसी अनेक गतिविधियां होने लगी जिनकी वजह से केशव चन्द्र सेन एवं देवेन्द्र नाथ टैगोर के बीच मतभेद हो गया जैसे -

- समाज का अन्तर्राष्ट्रीयकरण
- समाज में सभी धर्मों की पुस्तकों का पाठ (ईसाई, मुसलमान, पारसी और चीन)
- केशव चन्द्र सेन हिन्दु धर्म को संकीर्ण मानते थे। संस्कृत के मूल पाठ को ठीक नहीं माना।
- केशव चन्द्र सेन ने यज्ञोपवीत पहनने के विरुद्ध प्रचार किया
- अन्तर्राष्ट्रीय विवाह को प्रोत्साहन देना इत्यादि।

Raj Holkar

* देवेन्द्र नाथ टैगोर ने 1865 में केशव चन्द्र सेन को आचार्य की पदवी से निकाला।

ब्रह्म समाज
↓ (प्रथम विभाजन - 1865 में)

- **ब्रह्म समाज** (यह मूल ब्रह्म समाज ही था जिसका संचालन विभाजन के बाद देवेन्द्र नाथ टैगोर ने किया)
- **आदि ब्रह्म समाज** (केशव चन्द्र सेन द्वारा स्थापित शाखा)
  ↓ द्वितीय विभाजन : 1878 में
  - **आदि ब्रह्म समाज** (केशव चन्द्र सेन द्वारा स्थापित पुरानी शाखा)
  - **साधारण ब्रह्म समाज** (आनंद मोहन बोस एवं शिवनाथ शास्त्री द्वारा स्थापित)

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ ब्रह्म समाज का योगदान :- (55)

- बहुदेववाद तथा मूर्तिपूजा का विरोध।
- बहुपत्नि प्रथा एवं सती प्रथा का विरोध।
- विधवा विवाह का समर्थन एवं बाल विवाह का विरोध।
- नैतिकता पर बल, कर्मफल में विश्वास, सर्वधर्म समभाव, निर्गुण ब्रह्म की उपासना
- धार्मिक पुस्तकों, पुरुषों एवं वस्तुओं की सर्वोच्चता में अविश्वास
- छूआछूत, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव का विरोध।
- बांग्ला एवं अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार को समर्थन।
- हिन्दुओं द्वारा विदेश यात्रा को धर्म-विरुद्ध घोषित करने की आलोचना।

Raj Holkar

राजा राम मोहन राय

जन्म: 1774 ई. में बंगाल के एक ब्राह्मण परिवार में **शिक्षा**: पटना एवं वाराणसी

अन्य नाम/उपाधियाँ: पुनर्जागरण आन्दोलन का अग्रदूत, भारतीय जागृति का जनक सुधार आन्दोलनों का प्रवर्तक, आधुनिक भारत का पिता, अतीत और भविष्य के मध्य सेतु, भारतीय राष्ट्रवाद का जनक, भारत का प्रथम आधुनिक पुरुष, नव प्रभात का तारा।

भाषा ज्ञान: संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, अरबी, फ्रेंच, ग्रीक, जर्मन, लैटिन, हिब्रू एवं अन्य।

पत्रिका/पुस्तक लेखन:

- **तुहफात-उल-मुहद्दीन** (एकेश्वरवादियों को उपहार) – प्रथम ग्रंथ था जो फारसी भाषा में लिखा गया था। यह 1809 ई० में प्रकाशित हुआ। इसमें मूर्तिपूजा का विरोध किया एवं एकेश्वरवाद को सब धर्मों का मूल बताया।
- **प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस**: सन 1820 ई० में लिखी जो 1823 ई० में जॉन डिग्बी के प्रयासों से प्रकाशित हुई (लंदन से)।
- **संवाद कौमुदी**: सती प्रथा का विरोध किया। 1821 में बंगाली भाषा की पत्रिका
- **मिरात-उल-अखबार**: 1822 ई० में फारसी भाषा में।
- **ब्रह्मनिकल मैगजीन**: अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित ब्रह्मनिकल मैगजीन।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ राजा राममोहन राय की विचारधारा :-

- राजा राममोहन राय आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक समानता व ऐकेश्वरवाद में विश्वास रखते थे।
- धर्म के मामले में उनके विचार उपयोगितावादी (utilitarian) थे वह धर्मों को सत्य की कसौटी पर परखना नहीं चाहते थे बल्कि धर्मों के सामाजिक लाभ को देखते थे।
- उनका उद्देश्य संसार के सभी धर्मों को जाति, मत एवं देश इत्यादि बंधनों से दूर, एक ईश्वर के चरणों में लाना था।
- सती प्रथा का विरोध, विधवा पुनर्विवाह का समर्थन, स्त्री शिक्षा का समर्थन, बाल विवाह का विरोध, बहुपत्नी प्रथा का विरोध आदि के माध्यम से वह स्त्रियों की दशा के सुधार के पक्षधर थे।
- जातिवाद पर प्रत्यक्ष प्रहार, छुआछूत का विरोध, सामाजिक समानता में वृद्धि के पक्षधर होना बताता है।
- शिक्षा के क्षेत्र में वे अंग्रेजी शिक्षा के पक्षधर थे।

Raj Holkar

⇒ राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित संस्थाएं :-

- 1814-15 में इन्होने आत्मीय सभा का गठन किया।
- 1816 ई० में इन्होने वेदान्त सोसायटी की स्थापना की।
- 1821 ई० में इन्होने कलकत्ता यूनीटेरियन कमेटी की स्थापना की।
- 1817 ई० में डेविड हेयर के सहयोग से कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की
- 1825 ई० में वेदान्त कॉलेज की स्थापना की।
- 20 अगस्त, 1828 में ब्रह्म सभा (ब्रह्म समाज) की स्थापना की।

⇒ अन्य तथ्य :-

- राजा राममोहन राय जॉन डिग्बी के दीवान रहे थे।
- इन्हें राजा की उपाधि अकबर-II ने 1830 ई० में दी थी।
- राजा राममोहन राय की मृत्यु 1833 ई० में ब्रिस्टल (इंग्लैण्ड) में हुई थी। यहां उनकी समाधि भी स्थित है।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

आर्य समाज

स्थापना: 1875 ई० (बम्बई में) **मुख्यालय**: बम्बई (पहले) लाहौर (बाद में) 1877 में।

संस्थापक: स्वामी दयानन्द सरस्वती

उद्देश्य: प्राचीन वैदिक धर्म की शुध्द रूप से पुनः स्थापना करना।

- भारत को सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक रूप से एक सूत्र में पिरोना
- भारतीय सभ्यता व संस्कृति को, पाश्चात्य प्रभाव से, विकृत होने से बचाना

आर्य समाज व दयानन्द सरस्वती की विचारधारा :-

- आर्य समाज ने छुआछूत, जातिव्यवस्था का किया परन्तु वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया।
- ईश्वर के प्रति पितृत्व एवं मानव के प्रति भ्रातृत्व की भावना, स्त्री पुरुष समानता, लोगों के बीच पूर्ण न्याय की स्थापना एवं सभी राष्ट्रों के मध्य सौहार्दपूर्ण व्यवहार।
- हिन्दु धर्म में आत्मसम्मान एवं आत्म विश्वास की भावना जगाना एवं पाश्चात्य जगत की श्रेष्ठता के भ्रम से मुक्त कराना।
- इस्लामी एवं ईसाई मिशनरियों से हिन्दु धर्म की रक्षा कर अक्षुण्य बनाना।
- आधुनिकता एवं देशभक्ति के आदर्शों को अपनाना।
- अन्तर्जातीय विवाह तथा विधवा पुनर्विवाह को समर्थन करना।
- प्राकृतिक आपदाओं के समय लोगों को सहायता पहुँचाना। Raj Holkar
- शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा देना।
- लोगों का ध्यान परलोक की बजाय वास्तविक संसार में रहने वाले लोगों की समस्याओं की ओर आकृष्ट करना।
- ऐकेश्वरवाद को स्थापित करना, अवतारवाद का खण्डन करना।
- आत्मा की अमरता को स्वीकार किया एवं पुनर्जन्म को सत्य माना परन्तु श्राध्द जैसे कर्मकाण्डों का विरोध किया।
- कर्मफल एवं मोक्ष में विश्वास करते थे।
- वेदों को हिन्दुओं की सर्वोच्च धार्मिक पुस्तक माना।
- आर्यसमाज ने लडकों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु 25 वर्ष एवं लडकियों के लिए न्यूनतम उम्र 16 वर्ष निर्धारित की।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ आर्य समाज एवं दयानन्द सरस्वती के 10 प्रमुख सिद्धांत :-

- सत्य केवल वेदों में निहित है अतः वेद पाठ अति आवश्यक है।
- वेद मंत्रों के साथ हवन करना।
- मूर्ति पूजा का विरोध
- अवतारवाद एवं धार्मिक यात्राओं का विरोध
- कर्मसिद्धान्त और आवागमन (पुनर्जन्म) सिद्धांत का समर्थन।
- निराकार ईश्वर की एकता में विश्वास
- स्त्री शिक्षा में विश्वास
- विशेष परिस्थितियों में विधवा विवाह की स्वीकृति
- बाल विवाह एवं बहुविवाह का विरोध।
- ~~हिन्दु~~ हिन्दी, संस्कृत भाषा का प्रचार।

Raj Holkar

स्वामी दयानन्द सरस्वती

जन्म : 1824 ई. में मौरवी जिला (गुजरात)

बचपन : मूलशंकर

- स्वामी पूर्णानन्द ने 1848 ई. में इन्हें दयानन्द सरस्वती नाम दिया।
- 1861 ई. में सरस्वती मथुरा में स्वामी विरजानन्द से मिले एवं इनके शिष्य बन गए।
- 1863 ई. में सरस्वती ने हिन्दु धर्म रक्षा के लिए आगरा में पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहरायी
- 1875 ई. में आर्य समाज की स्थापना की।
- सरस्वती ने जन्म के स्थान पर कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया।

गौरक्षा आन्दोलन : गायों की रक्षा हेतु आर्य समाज ने आन्दोलन चलाया।

शुद्धि आन्दोलन : हिन्दु धर्म त्यागकर दूसरा धर्म स्वीकार कर चुके लोगों को पुनः हिन्दु धर्म में वापस लाने के लिए। आर्य समाज द्वारा चलाया गया आन्दोलन।

स्वामी दयानन्द की रचनाएं : सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेद भाष्य, वेद भाष्य, पाखण्ड खण्डन, अद्वैतमत का खण्डन, वल्लभाचार्य मत खण्डन, पंच महायज्ञ विधि।

- स्वामी दयानन्द का निधन 1883 ई. में अजमेर में हुआ।

-

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

प्रार्थना समाज

⇒ स्थापना : 1867 ई॰ (बम्बई में)

⇒ संस्थापक : डॉ॰ आत्माराम पाण्डुरंग (केशव चन्द्र सेन की प्रेरणा से)

⇒ परीक्षोपयोगी तथ्य :-

- यथार्थ रूप में यह ब्रह्म समाज की ही एक शाखा थी। यह एक गुप्त समाज थी और मुख्य रूप से समाज सुधार गतिविधियों पर केन्द्रित थी।
- 1869 ई॰ में महादेव गोविन्द रानाडे प्रार्थना समाज से जुड़े एवं इसे प्रसिद्धि दिलाई

⇒ प्रार्थना समाज के उद्देश्य :-

- जाति व्यवस्था को अस्वीकृत करना।
- स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देना।
- विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन देना।
- बाल विवाह का विरोध। लड़के लड़कियों की विवाह की आयु में वृद्धि।

⇒ प्रार्थना समाज से जुड़े महत्वपूर्ण व्यक्ति :

- महादेव गोविन्द रानाडे
- आर॰ जी॰ भण्डारकर
- एन॰ जी॰ चंदावरकर।

Raj Holkar

महादेव गोविन्द रानाडे

- रानाडे ने 1884 ई॰ में पुणे में दक्कन एजुकेशनल सोसायटी की स्थापना की।
- 1891 में महाराष्ट्र में विडो रिमैरिज एसोसिएशन की स्थापना की।

प्रो॰ डी॰ के कर्वे

- 1899 ई॰ में प्रो॰ डी॰ के॰ कर्वे ने पूना में विडो होम की स्थापना की।
- इन्होने 1906 ई॰ में बम्बई में इण्डियन वुमेंस यूनीवर्सिटी (भारतीय महिला विश्वविद्यालय) की स्थापना की।

नोट : पण्डिता रमा बाई ने आर्य महिला समाज की स्थापना की।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

रामकृष्ण मिशन एवं स्वामी विवेकानन्द

स्थापना : 1897 ई. (बेल्लूर, कलकत्ता में)

संस्थापक : स्वामी विवेकानन्द → [redacted] दरिद्रनारायण (व्यक्ति) की सेवा

उद्देश्य : लोकसेवा एवं समाज सुधार, भारत का सांस्कृतिक उत्थान, हिन्दु धर्म में जागृति लाना। रामकृष्ण परमहंस के विचारों का प्रसार करना।

⇒ रामकृष्ण परमहंस : ये कलकत्ता में एक मंदिर के पुजारी थे। इनकी भारतीय विचार एवं संस्कृति में पूर्ण आस्था थी परन्तु ये सभी धर्मों को सत्य मानते थे।
- ये ऐकेश्वरवाद में विश्वास रखते थे साथ ही मूर्तिपूजा में भी विश्वास था।
- इन्होंने चिन्ह एवं कर्मकाण्ड की अपेक्षा आत्मा पर बल दिया।
- वे ईश्वर प्राप्ति के लिए ईश्वर के प्रति निःस्वार्थ और अनन्य भक्ति में आस्था रखते थे। इन्हें दक्षिणेश्वर संत भी कहा जाता था।

स्वामी विवेकानन्द

Raj Holkar

- इनका जन्म 1862 ई. में हुआ एवं बचपन का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था।
- स्वामी विवेकानन्द के गुरू का नाम राम कृष्ण परमहंस (गदाधर चट्टोपाध्याय) था।
- 1893 में विवेकानन्द ने शिकागो में आयोजित प्रथम विश्वधर्म सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया एवं प्रसिद्ध प्राप्त की।
- खेतड़ी के राजा के सुझाव पर इन्होने अपना नाम स्वामी विवेकानन्द रखा
- फरवरी 1896 ई. में इन्होने न्यूयॉर्क में वेदान्त सोसायटी की स्थापना की।
- 1897 ई. में इन्होने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।
- 1900 में पेरिस में आयोजित द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में भी भाग लिया
- स्वामी विवेकानन्द ने मूर्तिपूजा एवं बहुदेववाद का समर्थन किया। इन्होने ईश्वर के साकार एवं निराकार दोनों रूपों को माना।
- स्वामी विवेकानन्द को नव हिन्दु जागरण का जनक (→ संस्थापक) माना जाता है।
- सुभाष चन्द्र बोस ने विवेकानन्द को, "आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का आध्यात्मिक पिता" कहा था।
- वेलेंटाइन शिरॉल ने "विवेकानन्द के उद्देश्यों को राष्ट्रीय आन्दोलन का कारण माना था।"
- आयरिश महिला मार्ग्रेट नोबल (सिस्टर निवेदिता) ने विवेकानन्द के उपदेशों का प्रचार प्रसार किया।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

यंग बंगाल आन्दोलन

⇒ संस्थापक: हेनरी विवियन डेरोजियो

⇒ उद्देश्य: जर्जर एवं पुराने रीति-रिवाजों का विरोध
- आत्मिक उन्नति एवं समाज सुधार
- नारी शिक्षा की वकालत करना एवं नारी अधिकारों की मांग
- प्रेस की स्वतंत्रता, जमींदारों की निरंकुशता पर प्रतिबंध एवं उच्च सेवाओं में भारतीयों की नियुक्ति की मांग

⇒ स्थापित किए गए संगठन:

आत्मिक उन्नति एवं समाज सुधार के लिए:
- एकेडमिक एसोसिएशन
- सोसायटी फॉर द एक्वीजीशन ऑफ जनरल नॉलेज

अन्य: एंग्लो-इंडियन हिन्दु एसोसिएशन
- बंगहित सभा
- डिबेटिंग क्लब

Raj Holkar

* हिन्दु कट्टरपंथियों ~~एवं~~ के विरोध एवं हिन्दु कॉलेज के प्रबंधकों द्वारा इस आन्दोलन से संबध्द विद्यार्थियों पर प्रतिबंध लगाया गया और यह आन्दोलन सफल न हो सका।

Raj Holkar

वेद समाज

स्थापना: 1864 ई॰ (मद्रास में)

संस्थापक: के॰ श्री धरालु नायडू

संबध्द नेता: वी॰ राजगोपाल चारलू, पी॰ सुब्रयल चेट्टी और विश्वनाथ मुदलियार

* वेद समाज को, "दक्षिण भारत का ब्रह्म समाज" कहा।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

थियोसोफिकल सोसायटी

स्थापना: 1875 ई॰ (न्यूयार्क में)

संस्थापक: मैडम एच॰पी॰ ब्लावेटस्की एवं कर्नल एम॰एस॰ अल्काट (अमेरिकी)
↳ रूसी महिला

मुख्यालय: संस्थापक जनवरी, 1879 ई॰ में भारत पहुंचे।
- 1882 ई॰ में अड्यार (मद्रास के पास) को मुख्यालय बनाया। यही इसका अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय बना।

मुख्य उद्देश्य: प्राचीन हिन्दु धर्म के लोगों के आत्म विश्वास को जगाना
- धर्म को समाज सेवा का मुख्य आधार बनाना, भेदभाव का विरोध

सिध्दांत: धर्म, दर्शन एवं गुह्य विधा का मिश्रण

दर्शन: मुख्य रूप से हिन्दु एवं बौध्द दर्शन से लिया

विचारधारा: दैव - विज्ञान

धार्मिक शिक्षा के चार बिन्दु:
1. ईश्वर की एकता
2. विश्व बंधुत्व
3. परमेश्वर के विविध रूप
4. दिव्य आत्मायें तथा प्राणियों का क्रम।

Raj Holkar

प्रयास: बाल विवाह एवं जातिपांति का विरोध
- विधवाओं की दशा में सुधार
- नवयुवकों की शिक्षा में सुधार
- प्रजाति, नस्ल, लिंग, जाति व रंग के भेदभाव को समाप्त कर लोगों के कल्याण के लिए प्रयत्न।
- हिन्दु धर्म की प्राचीन विरासत एवं पहचान को पुनर्स्थापित करना

Raj Holkar

अन्य तथ्य:- एनी बेसेन्ट 1893 ई॰ में भारत आयी।
- एनीबेसेन्ट ने 1898 ई॰ में वाराणसी में सेन्ट्रल हिन्दु कॉलेज की नींव रखी इसी कॉलेज को मदन मोहन मालवीय ने 1916 ई॰ में बनारस हिन्दु विश्वविधालय के रूप में विकसित किया।
- 1907 ई॰ में एनीबेसेन्ट थियोसोफिकल सोसायटी की 'अध्यक्षा चुनी गयी थी।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

अन्य आन्दोलन

⇒ **परमहंस मण्डली :-**

स्थापना : 1849-50 ई. [बम्बई में]
संस्थापक : आत्माराम पाण्डुरंग [बालकृष्ण जयकर एवं दादोबा पाण्डुरंग की सहायता से]

⇒ **देव समाज :-**

स्थापना : 1887 ई॰ (लाहौर)
संस्थापक : शिव नारायण अग्निहोत्री

उद्देश्य : आत्मा की शुद्धि, गुरु की श्रेष्ठता की स्थापना एवं अच्छे मानवीय कार्य करना।

⇒ **तत्वबोधिनी सभा :**

स्थापना : 1839 ई॰ (बंगाल में)
संस्थापक : देवेन्द्र नाथ टैगोर
अन्य संबद्ध सदस्य : राजेन्द्रलाल मिश्र, अक्षय कुमार दत्त एवं ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

Raj Holkar

⇒ **धर्म सभा :**

स्थापना - 1830 (बंगाल में)
संस्थापक - राजा राधाकांत देव
उद्देश्य :- सती प्रथा का समर्थन करना

उद्देश्य : सामाजिक धार्मिक मामलों में पुरातन एवं रूढ़िवादी तत्वों को संरक्षित करना।

Raj Holkar

⇒ **राधा स्वामी आन्दोलन :-**

स्थापना : 1861 ई॰ (आगरा में)
संस्थापक : शिवदयाल खत्री (साहूकार तुलसीराम)

⇒ **भारत सेवक संघ :-**

स्थापना : 1905 (बम्बई में)
संस्थापक : गोपाल कृष्ण गोखले

⇒ **सामाजिक सेवा संघ :-**

स्थापना : 1921 ई॰ (बम्बई में)
संस्थापक : नारायण मल्हार जोशी

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ **सेवा समिति :** (64)

स्थापना : 1914 ई० (इलाहाबाद में)

संस्थापक : हृदयनाथ कुंजरू

⇒ **भील सेवा मण्डल :**

स्थापना : 1922 ई० (बम्बई में)

संस्थापक : अमृतलाल विट्ठलदास (ठक्कर बापा)

⇒ **सेवा सदन :**

स्थापना : 1885 ई० (बम्बई)

संस्थापक : बी० एम० मालाबारी

Raj Holkar

⇒ **शारदा सदन :**

स्थापना : 1889 ई० (बम्बई में, बाद में पूना स्थानांतरित)

संस्थापक : पण्डिता रमाबाई

अन्य सदस्य : एम० जी० रानाडे एवं आर० जी० भण्डारकर [बाल गंगाधर तिलक द्वारा की आलोचना के कारण त्यागपत्र दिया]

⇒ **एस० एन० डी० पी० :-** [श्री नारायण धर्म परिपालन योगम]

स्थापना : 1903 ई० (केरल में) ये विशेष रूप से एक विशेष जाति के लिए किया गया क्षेत्रीय आन्दोलन था।

संस्थापक : श्री नारायण गुरु

नारा : मानव हेतु एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर।

उद्देश्य : इजयविस जाति (केरल की सबसे दलित एवं अछूत जाति) की सामाजिक स्थिति में सुधार।

- इस जाति के लोगों को मंदिरों में प्रवेश
- इस जाति को शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश, सरकारी सेवा में भर्ती
- राजनीतिक प्रतिनिधित्व दिलाना।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

मुस्लिम धर्म सुधार आन्दोलन

⇒ **अलीगढ़ आन्दोलन :-** इस आन्दोलन के प्रवर्तक सर सैयद अहमद खां थे

- यह आन्दोलन अंग्रेजी शिक्षा एवं ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग के पक्ष में था।
- इस आन्दोलन का उद्देश्य मुसलमानों को अंग्रेजी शिक्षा देकर उन्हें अंग्रेजी राज का भक्त बनाकर नौकरियों में अधिकाधिक आरक्षण प्राप्त करना था।

अलीगढ़ आन्दोलन में सैयद अहमद के सहयोगी: चिराग अली, नजीर अहमद, अल्ताफ हुसैन एवं मौ॰ शिबली नोमानी

सर सैय्यद अहमद खां :-

- सैय्यद अहमद खाँ का जन्म 1817 ई॰ में दिल्ली में हुआ था। 1839 ई॰ में आगरा के कमिश्नर दफ्तर में क्लर्क बने।
- 1857 के विद्रोह के समय ये कम्पनी की न्यायिक सेवा में थे।
- सर सैय्यद अहमद खां कम्पनी के प्रति पूर्ण राजभक्त थे।

Raj Holkar

किए गए प्रयास (अहमद खाँ द्वारा) :-

- तहजीब-उल-अखलाख (फारसी में) एक पत्रिका निकाली।
- 1864 ई॰ में कलकत्ता में साइंटिफिक सोसायटी की स्थापना की।
- 1864 ई॰ में गाजीपुर में अंग्रेजी शिक्षा के स्कूल की स्थापना की।
- 1875 ई॰ में अलीगढ़ में मुहम्डन एंग्लो-ओरिएन्ट स्कूल की स्थापना की। यह 1878 ई॰ में कॉलेज बना और 1920 ई॰ में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में परिवर्तित हुआ।
- कांग्रेस के विरोध में 1888 ई॰ में यूनाइटेड इंडियन पैट्रियाटिक एसोसिएशन की स्थापना की।
- पीरी-मुरीदी प्रथा को समाप्त करने का प्रयत्न किया।
- दास प्रथा को इस्लाम के विरुद्ध बताया।
- इन्होने कुरान पर टीका लिखी

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ अहमदिया आन्दोलन :- अन्य नाम: कादियानी आन्दोलन

- आन्दोलन की शुरुआत 1889 ई॰ में मिर्जा गुलाम अहमद ने पंजाब के गुरदासपुर जिले में कादियान नामक स्थान से की।
- यह उदारवादी सिध्दांतों पर आधारित धर्म सुधार आन्दोलन था।
- इसका उद्देश्य: इस्लाम के सच्चे स्वरूप की पुन: स्थापना करना था।
- इस आन्दोलन में जेहाद का विरोध किया गया है।

मिर्जा गुलाम अहमद :-

- बहरीन ए अहमदिया पुस्तक में इस आन्दोलन के सिध्दांत बताए हैं। इस पुस्तक को गुलाम अहमद ने लिखा है।
- गुलाम अहमद ने स्वयं को पुनर्जागरण का ध्वजधारी, मसीह-उल-मौऊद (मसीहा), एवं श्री कृष्ण का अवतार माना था।

Raj Holkar

⇒ देवबंद आन्दोलन :-

- इस आन्दोलन को प्रारंभ करने का श्रेय मुसलमान उलमा मु॰ कासिम ननौतवी तथा रशीद अहमद गंगोही को जाता है।
- यह एक पुनर्जागरणवादी आन्दोलन था इसके उद्देश्य:
  - i) मुसलमानों में कुरान एवं हदीस की शुध्द शिक्षा का प्रसार करना
  - ii) विदेशी शासकों के विरूध्द जिहाद की भावना जीवित रखना।
- मु॰ कासिम ननौत्वी एवं रशीद अहमद गंगोही के नेतृत्व में उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जिले में देवबंद नामक स्थान पर एक विद्यालय की स्थापना सन् 1866 ई॰ में की गयी।

Raj Holkar

देवबंद विद्यालय: अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य संस्कृति पूर्ण वर्जित थी।

- विद्यालय में शिक्षा ~~का~~ इस्लाम धर्म की दी जाती थी। जिसका उद्देश्य मुस्लिम धर्म का नैतिक एवं धार्मिक पुनरुध्दार करना था।
- विद्यार्थियों को सरकारी सेवा अथवा सांसारिक सुख के लिए नहीं बल्कि इस्लाम धर्म को फैलाने के लिए धार्मिक नेता के रूप में प्रशिक्षित करना।

- देवबंद आंदोलन ने कांग्रेस स्थापना का स्वागत किया था।
- देवबंद उलमा ने सर सैय्यद अहमद द्वारा स्थापित संयुक्त भारतीय राजभक्त सभा एवं मुस्लिम एंग्लो ओरिएण्टल सभा के विरूध्द फतवा जारी किया था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ **वहाबी आन्दोलन :-** प्रमुख केन्द्र : पटना

- मुसलमानों की पाश्चात्य प्रभावों के विरूध्द सर्वप्रथम प्रतिक्रिया इसी आन्दोलन के रूप में हुई। यह एक पुनर्जागरणवादी आन्दोलन था।
- इस आन्दोलन के प्रेरणास्त्रोत संत अब्दुल वहाब थे एवं प्रभाव वली उल्लाह का था।
- 19वीं सदी में मिर्जा अजीज एवं सैय्यद अहमद बरेलवी ने इसे आन्दोलन में परिवर्तित हो गया। इन्होने आन्दोलन को राजनीतिक रंग दिया।
- इस आन्दोलन का उद्देश्य "दार-उल-हर्ब" को "दार-उल-इस्लाम" में परिवर्तित करना था। यह पूर्णतः साम्प्रदायिक आन्दोलन था।
- इस आन्दोलन में पंजाब के सिक्खों के विरूध्द जेहाद छेड़ा।
- सैय्यद अहमद बरेलवी ने अनुयायियों को शस्त्र धारण करने के लिए प्रशिक्षित कर सैनिक के रूप में परिवर्तित किया।
- 1849 में अंग्रेजों द्वारा पंजाब के विलय के उपरान्त यह अभियान अंग्रेजों के विरूध्द बदल गया।
- यह मुसलमानों का मुसलमानों द्वारा मुसलमानों के लिए आन्दोलन था।

पारसी सुधार आन्दोलन

Raj Holkar

⇒ **रहनुमाए मजदयासन सभा :-** इसकी स्थापना 1851 ई॰ में दादा भाई नौरोजी, नौरोजी फरदोन जी, एस॰ एस॰ बंगाली एवं आर॰ के कामा आदि के योगदान से बम्बई में हुई।

- इसका उद्देश्य : पारसियों की सामाजिक अवस्था का पुनरुध्दार करना और पारसी धर्म की प्राचीन शुध्दता को प्राप्त करना था।
- इस सभा ने, स्त्रियों की दशा में सुधार, पर्दा प्रथा की समाप्ति और विवाह की आयु बढ़ाने पर बल दिया।
- सभा के सन्देशवाहन हेतु दादा भाई नौरोजी ने पत्रिका रास्त गोफ्तार (सत्यवादी) गुजराती भाषा में निकाली।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

19वीं एवं 20वीं शताब्दी में समाज सुधार

⇒ **सती प्रथा:** 1829 ई॰ में लार्ड विलियम बैंटिक के समय बन्द किया गया।
- राजा राम मोहन राय का महत्वपूर्ण योगदान था।
- अकबर एवं पेशवाओं ने भी कुछ रोक लगायी थी।
- कार्नवालिस, लार्ड मिन्टो एवं लार्ड हेस्टिंग्ज ने भी सती प्रथा को सीमित करने के प्रयत्न किए थे।
- 1829 में यह बंगाल में बंद किया गया एवं सती प्रथा को मानव हत्या के रूप में मानते हुए न्यायालयों को दण्ड देने का आदेश दिया।
- 1870 में यह बम्बई एवं मद्रास में भी लागू कर दिया।

Raj Holkar

⇒ **ठगी प्रथा:-** लार्ड विलियम बैंटिक के समय 1830 तक ठगों का दमन

⇒ **शिशु वध:-** गवर्नर जनरल जॉनशोर एवं वेलेजली का योगदान

⇒ **नरबलि प्रथा:** लार्ड हार्डिंग प्रथम के समय 1844-45 ई॰ तक समाप्त

⇒ **दास प्रथा:-** गवर्नर जनरल एलनबरो ने 1843 ई॰ में समाप्त किया।

⇒ **विधवा पुनर्विवाह:-** चार व्यक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा -

i) **ईश्वर चन्द्र विद्यासागर:** विधवा विवाह को मान्यता दिलवाने में।
- डलहौजी के समय 26 जुलाई 1856 ई॰ में विधवा पुनर्विवाह अधि॰ पारित कर दिया गया।

Raj Holkar

ii) **डी॰ के॰ कर्वे:** 1899 ई॰ में पूना में विधवा आश्रम की स्थापना
- 1906 में बम्बई में प्रथम भारतीय महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की।

iii) **वीरेशलिंगम पुन्तुलु:** दक्षिण भारत में विधवा पुनर्विवाह से संबंधित

iv) **विष्णु शास्त्री पंडित:** 1850 में विधवा पुनर्विवाह सभा की स्थापना।

1856 का विधवा पुनर्विवाह अधि॰ - ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयास से लार्ड कैनिंग के समय पारित। (26 जुलाई 1856)

1872 का ब्रह्म मैरेज एक्ट:- नार्थब्रुक के समय पारित [अंतर्जातीय विवाह भी शामिल]

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ बाल विवाह :- संबंधित अधिनियम :

i) सिविल मैरिज एक्ट, 1872 : लडकियों की विवाह की उम्र - 14 वर्ष एवं लडकों के विवाह की उम्र - 18 वर्ष निर्धारित।
- बहु पत्नी प्रथा को भी समाप्त किया।

ii) सम्मति आयु अधिनियम, 1892 :
- बहराम जी मालाबारी के प्रयत्नों से पारित। [19 मार्च, 1891 में पारित]
- लडकियों के विवाह की न्यूनतम आयु : 12 वर्ष कर दी गयी।
- बाल गंगाधर तिलक ने इस अधि॰ का विरोध किया था।

iii) शारदा अधिनियम, 1929 :-
- डॉ॰ हरविलास के प्रयत्नों से पारित।
- लडकियों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु : 14 वर्ष
- लडकों के विवाह की न्यूनतम आयु : 18 वर्ष

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

Raj Holkar

⇒ सर सैय्यद अहमद खां द्वारा लिखित पुस्तकें :
- अतहर असनादीद
- आसारुस्सनादीद
- लॉयल मुहम्डन्स ऑफ इंडिया
- असबाब - ए - बगावत - ए - हिन्द
- हिस्ट्री ऑफ रिवोल्ट इन बिजनौर

* सर सैय्यद अहमद खां को जव्वाद उद्दौला और आरिफ जंग की उपाधि दी गयी थी।
* सर सैय्यद अहमद खां मैनपुरी (उ॰प्र॰) के न्यायाधीश के पद पर रहे थे।
* गोपाल हरि देशमुख को लोकहितवादी के नाम से जाना जाता है।
* अब्दुल लतीफ को बंगाल के मुस्लिम पुनर्जागरण का पिता माना जाता है।
* अंग्रेजी के प्रथम भारतीय दैनिक इंडियन मिरर का संपादन केशव चन्द्र सेन ने किया
* स्वामी दयानन्द सरस्वती 'स्वराज' शब्द का प्रयोग करने वाले प्रथम भारतीय थे।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

कृषक आन्दोलन व जनजातीय आन्दोलन

⇒ **सन्यासी विद्रोह (1763-1800 ई.)** :- स्थान : बंगाल में

- विद्रोह करने वाले सन्यासी शंकराचार्य के अनुयायी थे एवं गिरी सम्प्रदाय के थे।
- विद्रोह प्रारंभ का कारण तीर्थयात्रा पर लगाया जाने वाला कर था। बाद में इस आन्दोलन में बेदखली से प्रभावित किसान, विघटित सिपाही, सत्ताच्युत जमींदार एवं धार्मिक नेता भी शामिल हो गये।
- विद्रोह के प्रमुख नेता - मूसाशाह, मंजरशाह, देवी चौधरानी एवं भवानी पाठक थे।
- विद्रोह को कथानक बनाकर बंकिम चन्द्र चटर्जी ने आनन्द मठ उपन्यास लिखा।
- विद्रोह को दबाने का श्रेय वारेन हेस्टिंग्स को दिया जाता है।

⇒ **फकीर विद्रोह (1776-77 ई.)** : बंगाल में मजनुन शाह एवं चिराग अली ने।

⇒ **रंगपुर विद्रोह (1783 ई.)** :- बंगाल में, विद्रोहियों ने भू-राजस्व देना बंद कर दिया था।

⇒ **दीवान वेलाटंपी विद्रोह (1805)** : त्रावणकोर के शासक पर सहायक संधि थोपने के विरोध में। वेलाटंपी के नेतृत्व में।
↳ यह 1857 के विद्रोह का पूर्वगामी भी कहा जाता है।

⇒ **कच्छ विद्रोह (1819)** :- कारण राजा भारमल को गद्दी से हटाना। नेतृत्वकर्ता भारमल एवं झरेजा थे।

⇒ **पागल पंथी विद्रोह (1813-1831 ई.)** :- स्थान : बंगाल में

- पागलपंथ एक अर्द्धधार्मिक सम्प्रदाय था जिसे करमशाह ने चलाया था।
- टीपू मीर, करमशाह का पुत्र था। टीपू ने जमींदारों के मुजारों (tenants) के विरुद्ध यह आन्दोलन शुरू किया था।

Raj Holkar

⇒ **अहोम विद्रोह (1828-33 ई.)** :- स्थान - असम में

नेतृत्व :- गोमधर कुंवर एवं रूपचन्द्र कोनार
कारण :- अहोम प्रदेश को अंग्रेजी राज्य में शामिल करने की कोशिश
समाप्ति : कंपनी ने शांतिपूर्ण नीति अपनायी एवं 1833 ई. में उत्तरी असम महाराज पुरन्दर सिंह को दे दिया।

Raj Holkar
KD Job Updates
Scanned by CamScanner

⇒ **मैसूर विद्रोह (1830) :-** अंग्रेजों द्वारा मैसूर पर सहायक संधि थोपने के बाद राज्य द्वारा बढ़ाई गयी भू-राजस्व की दर के विरोध में।

⇒ **बारासात विद्रोह (1831) :-** इसका नेतृत्व टीटू मीर ने किया। यह आर्थिक कारणो से प्रेरित विद्रोह था।

⇒ **फरैजी आन्दोलन (1820-1858) :-** स्थान : बंगाल, नेता : दादू मीर

- फरैजी लोग शरीयतुल्ला द्वारा चलाये गए संप्रदाय के अनुयायी थे।
- मोहम्मद मोहसिन (दादू मीर) ने जमींदारों की जबरदस्ती वसूली का प्रतिरोध करने के लिए किसानों को संगठित किया। यह अंग्रेजों एवं जमींदारों के विरुध्द किसान आन्दोलन था।
- दादू मीर ने नारा दिया - समस्त भूमि का मालिक खुदा है।
- इस आन्दोलन को वहाबी आन्दोलन का सहयोग प्राप्त था।

⇒ **पॉलिगरों का विद्रोह (1799-1801) :**

- पॉलिगरों ने विजयनगर साम्राज्य के काल में पूर्वी घाट के जंगलों में अपने स्वतंत्र राज्य कायम कर लिए थे। ये हथियारबन्द दस्ते रखते थे।
- यह विद्रोह अंग्रेजों के विरुध्द था जिसका नेतृत्व वीर॰पी॰ कट्टवामन्न ने किया।

Raj Holkar

⇒ **पाइक विद्रोह (1817-25) :-**

यह विद्रोह उडीसा तट के पहाडी खुर्द क्षेत्र में जगबंधु के नेतृत्व में 1817 में शुरु हुआ।

⇒ **रामोसी विद्रोह :-** क्षेत्र - पश्चिमी घाट

- रामोसी पश्चिमी घाट में रहने वाली एक आदिम जाति थी।
- 1822 ई॰ में चित्तर सिंह के नेतृत्व में विद्रोह शुरु हुआ।
- नरसिंह दत्तात्रेय पेतकर ने बादामी का दुर्ग जीतकर वहाँ सतारा के राजा का ध्वज फहरा दिया था।
- यह विद्रोह अंग्रेजों के ~~विरु~~ विरुध्द था।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ कूका आन्दोलन (1840-72 ई.) :-

- यह आन्दोलन धार्मिक आन्दोलन के रूप में शुरू हुआ इसका उद्देश्य सिक्ख धर्म में प्रचलित बुराइयों और अंधविश्वासों को दूर कर इस धर्म को शुद्ध करना था।
- बाद में यह आन्दोलन राजनीतिक आन्दोलन के रूप में परिवर्तित हो गया एवं इसका उद्देश्य अंग्रेजों को यहाँ से बाहर निकालना था।
- आन्दोलन की शुरूआत भगत जवाहर मल ने की। इनके साथ बालक सिंह भी आन्दोलन में शामिल थे।
- 1863ई. में राम सिंह कूका इस आन्दोलन से जुडे एवं पहला विद्रोह 1869ई. में फिरोजपुर में किया जो राजनैतिक था एवं उद्देश्य अंग्रेजों को उखाड फेंकना था।
- बाबा राम सिंह ने ही नामधारी आन्दोलन चलाया था।

प्रमुख जनजातीय आन्दोलन

Raj Holkar

⇒ कारण :-

- सरकार ने आदिवासियों में प्रचलित सामूहिक संपत्ति की अवधारणा के स्थान पर निजी संपत्ति की अवधारणा को थोप दिया।
- ब्रिटिश सरकार ने जनजातीय क्षेत्रों में साहूकार, जमींदार एवं ठेकेदार जैसे शोषक समूहों को स्थापित किया इन्होने जनजातियों का अत्यधिक शोषण किया।
- आदिवासी क्षेत्रों में अफीम की खेती पर रोक लगा दी एवं देशी शराब के निर्माण पर आबकारी कर लगा दिया गया।
- जनजाति क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ
- सरकार ने वन क्षेत्रों में कठोर नियंत्रण से जनजातियों द्वारा जनजातियों द्वारा ईंधन व पशुचारे के रूप में वन के प्रयोग पर भी प्रतिबंध लगा दिया।
- सरकार ने झूम कृषि पर प्रतिबंध।

Raj Holkar

Scanned by CamScanner

⇒ भील विद्रोह :- स्थान : महाराष्ट्र एवं राजस्थान

i) **महाराष्ट्र** : 1818 ई. में खानदेश पर अंग्रेजी आधिपत्य एवं नई कर प्रणाली तथा नई सरकार के भय से विद्रोह प्रारंभ हुआ। यह अलग-अलग समय में अलग अलग नेतृत्व में चलता रहा। 1820 में सरदार दशरथ, 1822 में हिरिया 1825 में सेवरम ने नेतृत्व किया।

- 1857 ई. में अंग्रेजों से लोहा लेने वाले भील नेता भागोजी तथा काजल सिंह थे।

ii) **राजस्थान में भील विद्रोह** :- राजस्थान में आदिवासियों के हकों के लिए पहला राजनीतिक संघर्ष एकी आन्दोलन / भोमट भील आन्दोलन के रूप में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में शुरू हुआ।

⇒ **कारण** :-
- 'बराड' आदि राजकीय करों की वसूली में भीलों के साथ क्रूर व्यवहार
- 'डाकन प्रथा' पर रोक व अन्य सामाजिक सुधारों से भीलों की भावनाएं आहत
- वनोत्पाद को संचित करने के भीलों के परम्परागत अधिकारों पर रोक
- तम्बाकू, अफीम, नमक आदि पर नए कर लगाना।
- अत्यधिक लाग-बाग व बैठ बेगार प्रथा।

Raj Holkar

~~- एकी आन्दोलन ने अहिंसक प्रति।~~
- मोतीलाल तेजावत ने अहिंसक एकी आन्दोलन की शुरुआत चित्तौडगढ़ के मातृकुण्डिया नामक स्थान से की।
- तेजावत ने 21 सूत्री माँग पत्र तैयार किया जिसे मेवाड पुकार संज्ञा दी।
- नीमडा गाँव में 7 मार्च, 1922 ई. में एक सम्मेलन में मेवाड भील कोर के सैनिकों ने अंधाधुंध फायरिंग की जिससे 1200 भील मारे गए। नीमडा हत्याकाण्ड दूसरा जलियांवाला हत्याकाण्ड था।

Raj Holkar

⇒ संथाल विद्रोह (1855-56) :- क्षेत्र : बिहार (भागलपुर से राजमहल तक)

कारण :- इस विद्रोह की शुरुआत आर्थिक कारणों से हुई परन्तु बाद में इसका उद्देश्य विदेशी शासन को खत्म करना बन गया। प्रमुख कारण - स्थायी बन्दोबस्त से जमीन छीन ली गयी, कर उगाहने वाले अधिकारियों का दुर्व्यवहार, पुलिस का दमन एवं साहूकार व जमींदारों की वसूली।
- यह अंग्रेजों, जमींदारों एवं साहूकारों के खिलाफ हिंसक विद्रोह था।
- इसका नेतृत्व : सिद्धु एवं कान्हू ने किया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ मुण्डा विद्रोह (1895-1901) :- क्षेत्र : छोटा नागपुर क्षेत्र

कारण: खूंटकट्टी (सामूहिक खेती) की परंपरा को जमींदारों, महाजनों एवं ठेकेदारों ने समाप्त करने का प्रयास किया।

- प्रारंभ में यह आन्दोलन सरदारी की लडाई के रूप में था परन्तु बाद में इसका स्वरूप सामाजिक - धार्मिक एवं राजनैतिक हो गया था।
- बिरसा - मुण्डा ने अपने आप को भगवान का दूत घोषित किया एवं अपने समर्थकों को सिंगबोंगा की पूजा करने की सलाह दी।
- बिरसा ने महाजनों, ठेकेदारों, हाकिमों और ईसाइयों एवं दिकुओं (गैर- आदिवासियों) के कत्ल का आह्वान किया।
- बिरसा मुण्डा मुण्डा जाति का शासन स्थापित करना चाहता था।
- इस आन्दोलन में मुण्डा महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी
- इस विद्रोह को उलगुलन विद्रोह एवं सरदारी लडायी के नाम से भी जाना जाता है। बिरसा मुण्डा को धरती आबा कहा जाता था।

⇒ कोल विद्रोह (1831-32) [redacted]) :-

Raj Holkar

यह विद्रोह झारखण्ड राज्य के छोटानागपुर क्षेत्र में हुआ।

कारण:- चावल से बनी शराब पर लगाया गया उत्पादन शुल्क
- इनकी जमीनों को कंपनी ने मुस्लिमों एवं सिक्खों को दे दिया।

नेतृत्व: यह आन्दोलन 1831 ई. में बुध्दो भगत के नेतृत्व में शुरू हुआ। 1832 ई. में इसका नेतृत्व गंगा नारायण ने किया।

⇒ खासी विद्रोह (1828-1833) :- क्षेत्र : जयन्तिया - गारो पहाड़ियाँ (मेघालय)

- इस विद्रोह का कारण अंग्रेजों द्वारा ब्रह्मपुत्र घाटी - सिलहट को जोडने के लिए एक सडक का निर्माण करने वाली योजना थी।
- इसका नेतृत्व तीरथ सिंह ने किया एवं साथ ही बारमानिक तथा मुकुन्द सिंह भी नेतृत्वकर्ता रहे।

Raj Holkar

⇒ खोंड विद्रोह (1846) :- क्षेत्र : उडीसा एवं उसके आसपास का क्षेत्र

कारण:- बाहर से आकर बसने वाले लोग, विदेशी सरकार का भय एवं मोरिया प्रथा (नरबलि प्रथा) पर लगाया गया प्रतिबंध।
- इस आन्दोलन का नेतृत्व चक्र बिसोई ने किया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

अन्य आन्दोलन

⇒ **रम्पा विद्रोह (1879 ई॰) :-** क्षेत्र : आंध्र प्रदेश

कारण :- जागीरदारों के भ्रष्टाचार एवं नए जंगल कानून

नेतृत्व :- राजू रंपा

⇒ **खामती विद्रोह (1839 ई॰) :-** क्षेत्र : असम

कारण : अंग्रेजी न्याय व्यवस्था, राजस्व वसूली के नियम एवं नए कर

नेतृत्व : खवागोहाई एवं रुनूगोहाई

Raj Holkar

⇒ **खोंडा-डोरा विद्रोह (1900 ई॰) :-** क्षेत्र : विशाखापत्तनम

कारण : अंग्रेजों को बाहर निकाल स्वयं का शासन स्थापित करना।

नेतृत्व : कोर्रामलैया

⇒ **चुआर विद्रोह (1768 ई॰) :-** क्षेत्र : मेदिनीपुर (बंगाल)

कारण : अंग्रेजों का शोषण एवं अत्यधिक राजस्व

नेतृत्व : राजा जगन्नाथ

Raj Holkar

⇒ **हो विद्रोह :-** स्थान : छोटानागपुर क्षेत्र

- बढ़े हुए भूमिकर के कारण अंग्रेजों एवं जमींदारों के विरूध्द।

⇒ **कूकी आन्दोलन (1917-1919) :**

- मणिपुर एवं त्रिपुरा राज्य में अंग्रेजों के खिलाफ

⇒ **गडकरी विद्रोह (1844 ई॰)** स्थान : महाराष्ट्र

⇒ **कित्तूर विद्रोह (1824-29)** स्थान : कर्नाटक

इसका कारण शासक की मृत्यु के बाद दत्तक पुत्र को मान्यता न देना था।

इसका नेतृत्व चिन्नावा (शासक की विधवा) ने किया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

प्रमुख किसान आन्दोलन

⇒ **नील आन्दोलन (1859-60 ई०) :-** स्थान : बंगाल

कारण :- i) बंगाल के वे काश्तकार जो अपने खेतों में चावल या अन्य खाद्यान्न फसलें उगाना चाहते थे, ब्रिटिश नील बागान मालिकों द्वारा उन्हें नील की खेती करने के लिए बाध्य किया जाता था।

ii) नील की खेती करने से इंकार करने वाले किसानों को नील बागान मालिकों के दमन-चक्र का सामना करना पड़ता था।

iii) **ददनी प्रथा :-** नील उत्पादक (बागान मालिक) किसानों को एक मामूली रकम अग्रिम देकर उनसे एक अनुबंध / करारनामा लिखवा लेते थे। यही ददनी प्रथा थी। इससे किसान नील की खेती करने के लिए बाध्य हो जाता था।

नेतृत्व कर्त्ता : दिगम्बर विश्वास एवं विष्णु विश्वास के नेतृत्व में इस आन्दोलन की शुरुआत बंगाल के नदिया जिले के गोविन्दपुर गाँव में हुई।

Raj Holkar

सफलता के कारण :-

i) रैय्यत (किसानों) ने एकजुटता, अनुशासन, संगठन एवं सहयोग से आन्दोलन किया।

ii) आन्दोलन को बंगाल के बुद्धिजीवी वर्ग का सहयोग प्राप्त हुआ। इस आन्दोलन के पक्ष में हरिश्चन्द्र मुखर्जी ने हिन्दु पैट्रियट द्वारा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। दीनबंधु मित्र के नाटक नील दर्पण में किसानों के शोषण की दशा वर्णित है।

iii) आन्दोलन को ईसाई मिशनरियों का भी समर्थन प्राप्त हुआ।

नील आयोग (1860) :- ब्रिटिश सरकार द्वारा नील आन्दोलन समस्या की जांच के लिए सीटोन कार की अध्यक्षता में चार सदस्यीय आयोग का गठन किया गया। आयोग ने रिपोर्ट में किसानों के शोषण की बात को स्वीकार किया।

- 1860 में अधिसूचना जारी कर नील की जबरन खेती पर रोक लगा दी गयी।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ **पाबना विद्रोह (1873-76 ई०) :-** स्थान : बंगाल

कारण : जमींदारों द्वारा लगान की दर को अत्यधिक बढ़ा देना

नेतृत्व कर्ता : ईसान चन्द्र राय, केशव चन्द्र राय एवं शंभू पाल

समर्थक : बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय एवं रमेश-चन्द्र दत्त एवं अन्य।

विशेष : यह आन्दोलन केवल जमींदारों के खिलाफ था ब्रिटिश शासन के खिलाफ नहीं था। नेताओं ने कहा - "हम महारानी और सिर्फ महारानी के रैय्यत होना चाहते हैं।"

⇒ **दक्कन उपद्रव (1875 ई०) :-** स्थान : महाराष्ट्र

कारण :- रैय्यतवाडी व्यवस्था से किसानों से उन्हें बिना मालिकाना हक दिए सीधा लगान वसूल करना।
- साहूकारों द्वारा अत्यधिक ब्याज वसूल करना।
- न्यायपालिका द्वारा पक्षपातपूर्ण न्याय साहूकारों के पक्ष में।

Raj Holkar

• यह आन्दोलन मूलत: साहूकारों एवं जमींदारो के खिलाफ था। शुरुआत में यह अहिंसक था बाद में हिंसक हो गया था। दक्कन कृषक राहत अधिनियम, 1879 द्वारा किसानों को साहूकारों के विरुध्द कुछ संरक्षण प्रदान किया।

⇒ **मोपला विद्रोह (1921) :-** स्थान : मालाबार तट (केरल)

Raj Holkar

मोपला : मोपला, मालाबार तट पर रहने वाले वे गरीब किसान थे जो अरब लोगों के वंशज थे। ये अधिकतर गरीब मुस्लिम किसान थे।

नम्बूदरी : ये उच्च वर्ण हिन्दु सम्पन्न जमींदार थे। जिन्हें प्रशासन का संरक्षण प्राप्त था

कारण :- i) ~~हिन्दु~~ सम्पन्न जमीदारों (नम्बूदरों) का गरीब मोपलाओं पर अत्याचार

ii) अंग्रेजी सरकार की खिलाफत विरोधी नीतियाँ।

नेतृत्व :- अली मुसलियार

समर्थन :- महात्मा गाँधी, मौलाना आजाद, शौकत अली

स्वरूप : यह विद्रोह जब 1836-54 के बीच हुआ तब यह अमीर एवं गरीब के बीच का संघर्ष था जिसे औपनिवेशिक शासकों ने साम्प्रदायिक रूप प्रदान किया।

- 1921 का विद्रोह जमींदारों एवं अंग्रेज हुकूमत के खिलाफ था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ एका आन्दोलन (1921-22):- स्थान: अवध

आन्दोलन के केन्द्र: हरदोई, बहराइच, सुल्तानपुर, बाराबंकी एवं सीतापुर

नेतृत्व: मदारी पासी और सहरेन

कारण:- अत्यधिक लगान, गैर कानूनी रूप से खेत छीनना (बेदखली), बेगार प्रथा

व्यापकता: काश्तकार (किसान) एवं छोटे जमींदार दोनों शामिल

⇒ संयुक्त प्रांत किसान आन्दोलन (1920-22):- स्थान: संयुक्त प्रांत

कारण:- आगरा एवं अवध क्षेत्र में जमींदारों एवं सरकार द्वारा किसानों का शोषण

- फसल नष्ट हो जाने के बावजूद अत्यधिक लगान वसूल करना

उ.प्र. किसान सभा (1918):- अवध में किसानों को संगठित करने के लिए गौरी शंकर मिश्र, इन्द्र नारायण द्विवेदी, मदन मोहन मालवीय के प्रयासों से उ० प्र० किसान सभा की स्थापना की गयी।

अवध किसान सभा (1920):- इस सभा का गठन बाबा रामचन्द्र ने किया था। ये मूलतः महाराष्ट्र के रहने वाले थे। सभा ने किसानों से बेदखल जमीन न जोतने और बेगार न करने की अपील की। नियमों का पालन न करने वाले किसानों का सामाजिक बहिष्कार (नाई-धोबी बन्द) करने तथा अपने विवादों को पंचायत के माध्यम से हल करने का आग्रह किसानों से किया।

स्वरूप:- मूलतः आन्दोलन अहिंसक था। किसान सभाओं द्वारा शांतिपूर्ण बैठकों, सामाजिक बहिष्कार, बेदखल जमीन को न जोतना एवं आपसी विवादों को पंचायत द्वारा सुलझाना इत्यादि तरीकों को अपनाया गया था परन्तु 1921 में कुछ क्षेत्रों में आन्दोलन ने हिंसक रूप ले लिया था। इस दौरान किसानों ने बाजारों, घरों एवं अनाज की दुकानों पर धावा बोलकर उन्हें लूटा और पुलिस के साथ हिंसक झडपें हुई।

Raj Holkar

अंत:- सरकारी दमन ने आन्दोलन को कमजोर किया।

- अवध माल गुजारी रेंट संशोधन अधिनियम ने आन्दोलन को कमजोर किया।
- मार्च, 1921 तक आन्दोलन लगभग समाप्त हो गया।

Raj Holkar

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ बारदोली सत्याग्रह (1928):-

कारण:- 1926 ई. में सरकार ने बारदोली में राजस्व 30%. (1927 में घटाकर 22%) कर दिया था जो किसानों के लिए अत्यंत हताशापूर्ण था क्योंकि एक ओर कपास के मूल्यों में गिरावट आयी और दूसरी ओर राजस्व दर में अत्यधिक वृद्धि के कारण किसान राजस्व देने में असमर्थ तो था ही नही बाध्य होकर अपनी जमीन बेचने तक के लिए मजबूर हो रहा था।

नेतृत्व:- किसानों की ओर से कांग्रेस नेताओं ने सरदार वल्लभ भाई पटेल को नेतृत्व करने का अनुरोध किया। 4 फरवरी, 1928 को पटेल बारदोली पहुंचे।

Raj Holkar

स्वरूप:- यह विद्रोह अहिंसक था। सरदार पटेल ने बारदोली को 13 शिविरों में विभाजित किया एवं प्रत्येक शिविर में एक अनुभवी नेता तैनात किया।

- एक प्रकाशन विभाग की स्थापना की, एवं रोज सत्याग्रह पत्रिका का प्रकाशन किया
- चोरी से राजस्व चुकाने वाले किसानों एवं सरकार की प्रतिक्रिया पर नजर रखने के लिए आन्दोलन का अपना खुफिया तंत्र बनाया गया।
- जागरूकता फैलाने के लिए बैठक, भाषण, परचों का सहारा लिया गया।
- चोरी छिपे राजस्व देने वाले किसानों को सामाजिक बहिष्कार की धमकी दी गयी।
- आन्दोलन के तरीकों का पालन सुनिश्चित करने के लिए बौद्धिक संगठन स्थापित किए गए।
- के. एम. मुंशी एवं लालजी नारंजी ने आन्दोलन के समर्थन में बम्बई विधान परिषद की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया।
- आन्दोलन के समर्थन में रेलवे हड़ताल का आयोजन किया गया।

जनसमर्थन: आन्दोलन में पुरुष एवं महिला दोनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी आन्दोलन में छात्रों ने भी भाग लिया। आन्दोलन को कांग्रेस का समर्थन प्राप्त था।

Raj Holkar

जांच कमेटी: ब्लूमफील्ड एवं मैक्सवेल समिति का गठन किया। इसने अपनी रिपोर्ट में 30% राजस्व वृद्धि को अनुचित ठहराया। सरकार ने 30% दर को घटाकर 6% कर दिया।

आन्दोलन से जुड़ी महिलाएं: कस्तूरबा गांधी, मनी बेन पटेल, शारदा बेन, मीठू बेन शारदा मेहता, भक्तिबा प्रमुख थीं।

★ महिलाओं ने इसी आन्दोलन पटेल को सरदार की उपाधि प्रदान की।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ **बिजौलिया आन्दोलन :-** स्थान : राजस्थान

कारण: जागीरदारों ने किसानों पर 84 प्रकार की लगान लगा रखी थी।

नेतृत्व:- प्रारंभिक नेता चारण और ब्रम्हदेव थे। बाद में नारायण बटले जुडे इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। यह सत्याग्रह भूप सिंह ने चलाया। बाद में भूपसिंह को गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन जेल से भाग कर विजय सिंह पथिक के नाम से बिजौलिया आन्दोलन में शामिल हुए। बाद में माणिक्य लाल वर्मा ने जमना लाल बजाज से मुलाकात कर उन्हें आन्दोलन का नेता बना दिया।

* 1922 ई. में भारत सरकार का एक प्रतिनिधि हॉलैण्ड बिजौलिया पहुँचा। इसकी मध्यस्थता से किसानों के साथ समझौता हुआ। अब 35 करों को हटा दिया गया।

Raj Holkar

⇒ **तेभागा आन्दोलन (1946-50) :-** स्थान : बंगाल

- इस आन्दोलन की शुरुआत त्रिपुरा के हसनाबाद से हुई यह मुख्यत: बंगाल में केन्द्रित था।
- इस आन्दोलन के प्रमुख नेता कम्पा राम सिंह एवं भवन सिंह थे।
- इस आन्दोलन में बंटाईदार किसानों ने एलान किया कि वे फसल का 2/3 हिस्सा लेंगे और जमींदारों को सिर्फ 1/3 हिस्सा ही देंगे। बंटवारे के इसी अनुपात के कारण इसे तेभागा आन्दोलन कहते हैं।

Raj Holkar

⇒ **तेलंगाना किसान आन्दोलन :-** स्थान : तेलंगाना

कारण: द्वितीय विश्व युध्द के बाद किसानों से कम दाम पर जबर्दस्ती अनाज का वसूला जाना। इसका तात्कालिक कारण कम्यूनिस्ट नेता एवं किसान संगठनकर्ता कमैया की पुलिश द्वारा हत्या कर देना था।

- इस आन्दोलन में किसानों ने मांग की कि हैदराबाद रियासत को समाप्त किया जाए तथा उसे भारत का अंग बना दिया जाए।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ **वर्ली आन्दोलन (1945 ई.) :-**

बम्बई के निकट रहने वाली आदिम जाति वर्ली ने किसान सभा की सहायता से मई, 1945 में जंगल के ठेकेदारों, साहूकारों, धनी कृषकों एवं जमींदारों के विरूध्द आन्दोलन किया।

⇒ **बकाश्त आन्दोलन (1946-47) :-** स्थान : बिहार

बकाश्त : ये वे किसान थे जो जमींदारों द्वारा दी जाने वाली भूमि पर प्रतिवर्ष किराया चुका कर कृषि करते थे।

Raj Holkar

बकाश्त किसानों के पास कोई वैधानिक अधिकार नहीं थे। जमींदार बकाश्तों का शोषण करते थे इसी कारण बकाश्त एवं जमींदारों के बीच जमकर संघर्ष हुआ।

⇒ **पुन्नप्रा एवं वायलार का संघर्ष (1946) :-** स्थान : केरल

यह आन्दोलन किसानों एवं मजदूरों का मिला जुला संघर्ष था जो सामन्ती उत्पीडन एवं शोषण के विरूध्द था। सामन्त, किसानों एवं मजदूरों के साथ गुलामों जैसा व्यवहार करते थे।

Raj Holkar

अखिल भारतीय किसान संगठन

बिहार किसान सभा :- इसका गठन 1927 ई. में स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने किया।

आंध्र प्रांतीय किसान सभा : गठन 1928 ई. में एन. जी. रंगा ने किया

अखिल भारतीय किसान सभा :- इसका गठन 1936 ई. में हुआ। इसका गठन सभी प्रांतीय किसान सभाओं को मिला कर किया गया था।

- पहला अखिल भारतीय किसान सम्मेलन 11 अप्रैल, 1936 ई. में लखनऊ में आयोजित हुआ। इसके अध्यक्ष स्वामी सहजानन्द सरस्वती एवं महासचिव एन. जी. रंगा को चुना गया। इसमें जवाहर लाल नेहरू भी शामिल हुए थे।
- 1 सितंबर, 1936 को किसान दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया।
- 1938 ई. में आंध्र प्रदेश के गुण्टूर जिले के निडुब्रोल में पहला भारतीय किसान स्कूल खोला गया था।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

निम्न जाति आन्दोलन

⇒ सत्य शोधक समाज :-

स्थापना : 1873 ई. में, बम्बई में, ज्योतिबा फुले

उद्देश्य : ब्राह्मणों के आडम्बर और उनके अवसरवादी धार्मिक ग्रंथों की बुराइयों से निम्न जातियों को बचाना।

- सामाजिक सेवा, स्त्री एवं निम्न जाति के लोगों की शिक्षा
- संस्कृत हिन्दुत्व का विरोध।

सम्बद्ध व्यक्ति : केशव राय जेठे और दिनकर राव ने पुना में समाज का नेतृत्व किया इन्ही के कारण ही समाज अंग्रेजी राज्य और कांग्रेस दोनों के विरूध्द हो गया।

ज्योतिबा फुले की पुस्तकें - 1872 ई. में गुलामगीरी लिखी।
- सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक

- ज्योतिबा फुले ने ब्राह्मणों के प्रतीक चिन्ह 'राम' के विरोध में 'राजा बालि' को अपने आन्दोलन का प्रतीक चिन्ह बनाया।

Raj Holkar

⇒ डॉ भीमराव अम्बेडकर :-

- 1920 ई. में ऑल इण्डिया डिप्रेस्ड क्लास फेडरेशन की स्थापना
- 1924 ई. बहिष्कृत हितकारिणी सभा
- 1927 ई. समाज समता संघ
- 1942 ई. अनुसूचित जाति परिसंघ

Raj Holkar

अम्बेडकर ने, निम्न जातियों के लिए पृथक निर्वाचन की माँग की।
- मंदिरों में सभी को जाने के लिए आन्दोलन चलाया
- कांग्रेस का विरोध किया एवं ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पक्ष में था।
- अछूतों एवं हिन्दुओं में सामाजिक समानता का प्रचार
- मजदूर वर्ग के हितों की रक्षा, ~~अछूतों~~ अछूतों के हितों की रक्षा के लिए कदम उठाए।

- डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दु धर्म का त्याग कर बौध्द धर्म ग्रहण किया।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

⇒ अरुवीपुरम आन्दोलन :- स्थान : केरल , प्रारंभकर्ता : नारायण गुरु
यह 1888 ई. में निम्नजाति में धार्मिक छूट के लिए शुरू किया गया था।
नारायण गुरु : " मानव के लिए एक धर्म, एक जाति और एक ईश्वर है।"
अयप्पन राजराजन : " मानव का न कोई धर्म है, न कोई जाति है और न ही कोई ईश्वर है।"

Raj Holkar

⇒ जस्टिस आन्दोलन (1916-17) :- स्थान : मद्रास
प्रारंभकर्ता : सी० एन० मुदलियार, टी०एम० नायर, पी० तियागराया चेट्टी
- इस आन्दोलन में धनवान जमींदार, व्यापारी लोग शामिल था।
- यह ब्राह्मण विरोधी आन्दोलन था क्योंकि गैर ब्राह्मणों की तुलना में ब्राह्मणों को सरकारी नौकरी, शिक्षा एवं राजनीति में उच्च स्थिति थी।

⇒ आत्म सम्मान आन्दोलन : स्थान : तमिलनाडु
नेतृत्व : ई० वी० रामास्वामी नायकर उर्फ पेरियार (1926 में)
- यह आन्दोलन निम्न जाति के अधिकारों को लेकर था। इसमें बिना ब्राह्मणों की सहायता से विवाह, मंदिरों में निम्न जातियों का जबरदस्ती प्रवेश, मनु स्मृति के खिलाफ आचरण करने की बातें शामिल थी।
- इसका उद्देश्य निम्न जाति को समाज में उचित सम्मान दिलाना था।

Raj Holkar

⇒ वायकॉम सत्याग्रह (1924 ई.) :- स्थान :- त्रावणकोर से शुरू.
- यह आन्दोलन त्रावणकोर के वायकूम गाँव से एक हरिजन के मंदिर में प्रवेश न करने देने को वजह से शुरू हुआ।
- मदुरै में इसका नेतृत्व रामास्वामी नायकर ने किया।

⇒ गुरुवायुर सत्याग्रह (1931) :- स्थान : गुरुवायुर (त्रावणकोर)
- यह आन्दोलन हरिजनों एवं निम्न जातियों को मन्दिरों में प्रवेश न देने के विरोध में हुआ।
- 1932 में के. कलप्पन आमरण अनशन पर बैठ गए गाँधी जी के आश्वासन पर इन्होंने अपना अनशन तोड़ा।
- अन्य नेता : पी सुब्रह्मण्यम, के पिल्लई एवं ए. के. गोपालन प्रमुख थे।

KD Job Updates

Scanned by CamScanner

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

* नियोजकों के विरुध्द मजदूरों की पहली हड़ताल 1877 ई॰ में नागपुर एम्प्रेस मिल में की गयी।

* भारत में गठित प्रथम मजदूर ~~संघ~~ संगठन बॉम्बे मिल हैण्ड्स एसोसिएशन था जिसकी स्थापना एन॰ एम॰ लोखण्डी ने की थी।

* मजदूर वर्ग की पहली संगठित हड़ताल ब्रिटिश स्वामित्व की ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे में हुई।

⇒ मद्रास श्रमिक संघ: स्थापना: मद्रास में 1918 ई॰ में बी॰ पी॰ वाडिया ने की। यह पहला व्यवस्थित श्रमिक संघ था। कपड़ा उद्योग से संबंधित

⇒ अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (ATLA):

- यह ट्रस्टीशिप के सिध्दांत पर गांधीजी ने 1918 में स्थापित किया।

⇒ ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC):-

Raj Holkar

स्थापना: बम्बई में 1920 ई॰ में एन॰ एम॰ जोशी द्वारा

अध्यक्ष: लाला लाजपत राय उपाध्यक्ष: जोसेफ बैप्टिस्टा

महामंत्री: दीवान चमन लाल

- इसकी स्थापना 107 ट्रेड यूनियनों को मिलाकर हुआ था।
- एन॰ एम॰ जोशी, AITUC के प्रतिनिधि के रूप में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन में भेजे गए थे।

Raj Holkar

⇒ इण्डियन ट्रेड यूनियन फेडरेशन (ITUF):- | AITUC के प्रथम विभाजन के बाद अस्तित्व में आयी।

एन॰ एम॰ जोशी और वी॰ वी॰ गिरी के नेतृत्व में गठित।

⇒ रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस (RTUC):- | AITUC में दूसरा विभाजन

- रणदिवे एवं देश पाण्डे के नेतृत्व में 1931 में गठन।

नोट: 1938 में AITUC + ITUF + RTUC का संयुक्त अधिवेशन नागपुर में हुआ था।

⇒ इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (INTUC):- मई, 1947 में स्थापित

संस्थापक: बल्लभाई पटेल, वी॰ वी॰ गिरी, प्रथम अध्यक्ष - पटेल

KD Job Updates

Scanned by CamScanner